

नचिकेता

नायक क नाम
जीवन

नचिकेता

प्रकाशक :
अखिल भारतीय मिथिला संघ
६/१, खेलात घोष लेन,
कलकत्ता-६

प्रथम संस्करण :

दिसम्बर, १९७१ ई०

प्रकाशक :

अखिल भारतीय मिथिला संघ

९/१, खेलात घोष लेन, कलकत्ता-६

स्वत्वाधिकारी :

नचिकेता

आवरण-शिल्पी :

नचिकेता

मुद्रक :

अजय सिंह

सिंह प्रेस,

१६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

मूल्य :

दू टाका

भूमिका

नायक क नाम जीवन। मानव-जीवन मे दुःखक तुहिन-पात अबैत छैक त सुख क रंगीन किरण क स्पर्श सेहो होइत छैक। आवर्त्त-कुटिलता क राति एवं स्वप्निल सुनील दिन—दुनू कें ल' कए गठित भेल अछि मनुष्य क जीवन और धीरक दृष्टि मे एहि दुनू क सामंजस्ये थीक जिजीविषाक विकट प्रश्न क सन्तुलित उत्तर। किन्तु बहुधा आशा-निराशा क झूला पर झूलैत आकांक्षा आदि प्रेत-लोक क छाया जकाँ चरित्र सब कें हारि कए ल' जाइत अछि नियति क अमोघ परिणति दिसि। एहर कुत्सा-कल्मष सँ आविल प्रेयसी भोगैषणा क मर्मभेदी इंगित कें जीवन क चरम काम्य निर्देश क रूप मे ग्रहण कैनिहार अर्थान्वेषी वर्ग तथा क्रूर यथार्थ क आवर्त्त सँ झमारल ऋजु-पंथ क अतिक्रान्त नाविक लोकनि अथवा जीवित रहबाक लालसा सँ उताहुल चित्र-विचित्र नाना रूप-धारी चरित्र सब ठाढ़ भ' गेल छथि हमर लेखिनी क आगाँ—नाटक क पात्र बनबाक प्रार्थना मे। और हिनके सब कें ल' कए जन्मल अछि हमर नाटक—नायक क नाम जीवन। हमरा विश्वास अछि जे हमर काव्यग्रन्थ 'कवयो वदन्ति' आ' 'अमृतस्य पुत्राः' जकाँ गणदेवता एहि नवीन प्रयासहु कें अपनौताह।

पुस्तक-प्रकाशनक क उदार परिकल्पनाक लेल हम अखिल भारतीय मिथिला संघ कें हार्दिक धन्यवाद द' रहल छियन्हि।

—नचिकेता

पात्र-परिचिति

नाट्यकार—मध्यवयस्क लेखक।

शक्ति—लोभी, स्वार्थी, उच्चाभिलाषी, मध्यवयस्क व्यवसायी।

लखपति—अर्थ-सर्वस्व, महत्वाकांक्षी व्यवसायी।

विनय—न्याय-निष्ठ, सरल-हृदय, मदिरासक्त व्यवसायी।

नवल—बलिष्ठ, निर्लोभ, उदारचेता युवक। शक्ति क पुत्र।

प्रकाश, दीपक } निर्भीक, कर्मठ, समाजक नव-निर्माणक लेल उत्सर्गी-कृत-प्राण युवक द्वय। नवल क मित्र।

कालू सरदार—शक्तिमत्त, परस्वापहारी, अर्थपिशाच गुण्डा।

मन्नूराम—उच्चाकांक्षी, प्रतिहिंसा-परायण गुण्डा। कालू सरदार क सहायक।

पहिल गुण्डा—आन्हर (रहमत अली) दोसर गुण्डा—कोढ़ी। तेसर गुण्डा—लूल्ह। चारिम गुण्डा—तोतराह।	कालू सरदार क अधीनस्थ चारि टा गुण्डा।

रामभरोस—समाज-सेवक क भेष मे एक असाधु व्यवसायी।

पहिल किरानी, दोसर किरानी } शक्ति क अधीनस्थ दू टा परनिन्दा-मुखर कर्मचारी।

दरोगा, सिपाही आदि।

सुनीता—विनय क आत्मजा, नवल क प्रेमिका।

नर्त्तकी—कालू सरदार क अखाड़ा क नर्त्तकी।

नायक क नाम जीवन

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

[मंच क दू भाग—अग्र एवं पश्च भाग—देखल जाइछ। पश्च भाग दुतल्ला अछि, जकर ऊर्ध्व भाग मे एक पार्कक दृश्य तथा अधो भाग मे एक उच्चवित्त लोक क ड्राइङ्ग रूम क दृश्य दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। पार्क क चारूकात रंग-बिरंगी फूल तथा हरियर-हरियर झमटगर मुदा मध्यम आकार क गाछ सभक सुललित कतार सुशोभित भ' रहल अछि। तकर मध्य मे पाथर क एकटा वेदी लखा दैत अछि। निम्न भाग-स्थित ड्राइंग रूम मे प्रेक्षक क दक्षिण दिशि दू टा सोफा आ' तकर सम्मुख एक तिपाइ पर राखल चारि-पाँच टा फिल्मी पत्र-पत्रिका दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। एहि प्रकोष्ठक मध्य सम्मुखस्थ दिवाल पर एक सुन्दर फ्रेम मे बन्हाओल वृहदाकार देवी मूर्त्ति टाँगल अछि। मूर्त्ति क लगले निम्न भाग मे वेदी क ऊपर पूजा क सरंजाम, धूप - दीप, शंख, गीता तथा रुद्राक्ष-माला

राखल अछि। ई चित्र एना राखल अछि जकरा प्रयोजन भेला उत्तर शीघ्रहि हटाओल जा सकैछ, कारण ओकरहि पाछाँ मे गृह स्वामी शक्तिबाबूक गुप्त सन्दूक क द्वार छैक। प्रेक्षक लोकनिक बाम दिसि, कनेक आगाँक कोनहि लग एक ऊँच रेडियो-टेबुल पर रेडियो राखल अछि। रेडियो-टेबुल आ' चित्रक मध्य एकटा नान्हि सनक शीशाक अलमारी मे पुस्तक सब सुसज्जित अछि। अलमारी क ऊपर एक फूलदानी राखल अछि। मंच क बाम प्रान्त मे केवाड़ी लगा छैक, जाहि पर चित्रित पर्दा झूलि रहल अछि। प्रकोष्ठ क एक कोन मे एक मनोरम हरियर वा नील रंगक स्टेंडिंग लैम्प वातावरण पर अपन प्रभाव विकीर्ण क' रहल अछि।

यवनिका उठैछ। मंचक पश्च भागक निम्नांश एक कारी पर्दा सँ झाँपल अछि। ई पर्दा समयानुसार ऊपर उठि कए ऊर्ध्व भाग कें झाँपि ल' सकैछ। यवनिकाक उठबाक संगहि चारूकात अन्हार भ' जाइत अछि। मंचक अग्र भागक मध्य मे टेबुल लग किताबक भीड़ मे एक कुर्सी पर बैसल नाट्यकार। अन्हार मे माथ पर हाथ धैने, हाथ मे उन्मुक्त कलम रखने ओ कनेक चिन्तातुर प्रतीत भ' रहल छथि। तखनहि नाट्यकार पर अत्यन्त अल्प आलोक पड़ैछ।]

नाट्यकार—उफ! किछु फुरते नहि अछि! आब आगाँ की लिखू? नायक कें ने जीवित राखि सकैत छी, ने मारि सकैत

छी। पूछू कियैक ? [अपन स्थान पर सँ उठि कए मंचक ओर सम्मुख आबि कए] पुछैत छी कियैक ? एम्हर प्रकाशक पहिनहि सँ कहि देने छथि—"औ महाशय, अपने त एकहु टा नायक कें मारिते नहि छियैक।" त हम कहने छलियन्हि, प्रकाश बाबू, नायक कें मारू कथी लेल ? ओ हँसि कए कहलथिन्ह—"हे लियह ! ईहो नहि बुझलहुँ ? अहाँ क पड़ोसी लेखक असित बाबू अपन तीन-तीन टा नाटक क नायक कें अन्त मे मारिये देने छथि।" हम कहलियन्हि, त ताहि सँ की भेल ? ओ कहलन्हि, "ताहि सँ की भेल ? ताहि सँ पुस्तक क बिक्री बढ़लैक, नाटक जमलैक, आ' दर्शकगण नोर पोछैत-पोछैत घर गेलाह, टिकट क दाम वसूल भेलैक—आब हैबा मे बाकी की रहल कहू त ?" औ महाराज, की कहू ? हम त हुनकर बात सुनतहि अवाक् रहि गेलहुँ। ओ फेर कहलन्हि जे एहि बेरि हम जौं नायक कें नहि मारी त ओ असिते बाबू सँ नाटकक सट्टा क' लेताह। [बिराम ल' कए] अहाँ सब कहब—"त एहि मे चिन्ता क कोन गप्प छैक ? नायक कें मारिये दियौक ने ! अहाँ कें की खगैत अछि ? [पुनः बिराम] किन्तु कनेक सोचू त, जकरा ल' कए हम ई नाटक लिखि रहल छी, ओ यावत् धरि नहि मरै तावत् हम ओकरा मारि दियौक ? [स्वर मे परिवर्त्तन आनि, नाट्यकार घूमि कए टेबुलक आगाँ आबि दुनू हाथ टेबुल पर राखि ठाढ़ होइत छथि; प्रकाश-रेखा हुनक मुहँ पर

पड़ैछ।] आ साँच पूछू त नवलकें हम जीविते कोना कहू ? प्रति पल, प्रति मुहूर्त्त ओ अपन कथीक ने प्रायश्चित्त क' रहल अछि, अर्द्धपागल जकाँ बकि रहल अछि। दिन मे ओ स्वस्थ देखना जाइछ, मुदा राति होइतहि......... [वाक्य असमाप्त रहि जाइछ। प्रकाश-रेखा विलीन भ' जाइछ।]

द्वितीय दृश्य

[मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश क्रमशः आलोकित भ' उठैछ। नवल कें माथ पर हाथ धैने बैसल देखना जाइछ। नवल क वेश मलिन और केश रूक्ष देखना जाइछ। रहि-रहि कए विद्युत क रेखा देखना जाइछ आ' संगहि वज्रपात क शब्द सेहो सुनना जाइछ। वज्रपात क शब्द सुनितहि नवल चौंकि उठैत अछि और किछु भयभीत सन बुझना जाइछ। हठात् नारी कण्ठ क एकटा तीव्र, तीक्ष्ण आर्त्त स्वर वज्रपातहु मे सुनाइ पड़ैछ। आर्त्तस्वर क प्रतिध्वनियो क चुप हैबाक पश्चात् नवल दर्शक क दिसि घूमि कए, कनेक चौंकैत चिकरि उठैछ।]

नवल—[कनेक जोर सँ] के ? [जोर सँ] के छें ओतय ? [वेदी सँ उठि कए कनेक अगुआबैछ] जवाब कियैक नहि दैत छें ? [हठात् एकटा नारी कंठक खिलखिलाहट सुनाइ पड़ैछ। चारूकात निहारैछ, ककरहु नहि पबैछ। मुदा ओ नारीकंठ

हँसैत रहि जाइछ।] तोरा भगवान क सप्पत, बाज के छें ? नहि त हम पागल भ' जायब। [किछु देखबाक अभिनय क' कए।] ओह ! सुनीता, अहाँ ? हम सोचलहुँ..., जाय दियह। मुदा अहाँ —अहाँ कथी लेल आयल छी ? [फेरो विद्युत् चमकैत अछि...] सुनीता ! प्लीज सुनीता, अहाँ ओना क' कए नहि ताकू, हमर सबटा अंग जेना भरकि जाइछ। [किछु काल मौन रहि कए, दू-चारि बेरि घूमि कए] सुनीता ! हम जनैत छी, अहाँ क मन मे कथीक बिहाड़ि उठि रहल अछि। अहाँ आपन बाबू जी क मृत्यु कें एखनहु धरि नहि बिसरलहुँ अछि। [स्वर बदलि कए, उत्तेजित भए] किन्तु अहाँ विश्वास करू ! हम निर्दोष छी। हम हुनक हत्या क विषय मे किछु नहि जनैत छलहुँ, किछु नहि। [कनेक थम्हि कए वेदी क नीचाँ बैसल नवल वेदी कें सुनीता मानि मुसकुराहट भरल मुख मे मनुहार ल' कए कहैत छथि] अ-अहाँ बिश्वास कैलहुँ ने ? निश्चय कैने हैब ! [उठि कए] आब हमरा कोनो चिन्ता नहि। अहाँ टा हमरा पर भरोस राखू सुनीता। नीता, हम ई सब चक्र-चालि किछु नहि जनैत रही ; हम काल्हू सर्दार कें वा ओकर अखाड़ा कें ओहि सँ पहिने नहि जनैत रही। हम नहि जनैत रही, हमर मुहल्ला क मातल लोग सब राति क पहर मे जाहि कोठा सब सँ घुरैत छलथि, ओहि महक वेश्या सब काल्हू सरदार क अधीन छैक। आ' ईहो नहि जनैत छलहुँ

जे लूलह्-अपंग भिखारी क दल, जे लोग कें पथ चलैत टू-टा फाटल पैसा क लेल संग करैत छल, तकरा सब मे सँ प्रत्येक क भेष क तर हमरहि लोकनिक मुहँ, हमरहि लोकनिक समृद्धि क निश्चिन्तता आँकल अछि। विश्वास करू, ई सब हम नहि जनैत छलहुँ। [एहि समय नेपथ्य सँ कोलाहल क शब्द सुनल जाइत अछि। पुरुष आ' नारी-कंठ सँ कैक गोटे नवल कें ओकर नाम ध' कए बजा रहल छथि। नवल किछु काल उत्कर्ण भ' कए एहि शोरगुल कें सुनैत अछि। फेर कोलाहल क धीरे-धीरे कम भ' गेला उत्तर नवल सुनीता कें कहैछ] सुनीता, ऐ; सुनैत छी? प्लीज, हमरा आजु क लेल कनेक मुक्ति दियह। हमरा दिशि सँ अहाँ अपन दृष्टि घुमा लियह। आन कत्तहु ताकू, आन ककरहु दिसि; बस आइये टा—

[बत्ती मिझा जाइछ। चारूकात अन्हार। नेपथ्य सँ धीरे-धीरे जे कोलाहल क क्षीण शब्द तखनहु सुनाइ पड़ैत छलैक, किछु काल पश्चात् कनेक तीव्र भए बन्द भ' जाइछ। किछु क्षण निस्तब्धता क पश्चात् दू-एकटा कागक स्वर क संग बाँसुरी मे पराती क धुन सुनल जाइत अछि। संगे-संग पुनः मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश आलोकित भ' उठैत अछि। देखल जाइछ जे नवल चादर ओढ़ने पार्क क वेदी पर सूतल अछि। ओ एक बेर चादर सँ मूड़ी निकालि कए

पुनः चादर ओढ़ि लैछ कि तखनहि नाट्यकार क प्रवेश होइत अछि।]

नाट्यकार—[पार्क मे बैसबाक बेंच पर नवल कें सुतल देखि] ऐ, हे यौ महाशय !

नवल—[चादर सँ कनेक मूड़ी निकालैत] की थीक ?

नाट्यकार—उठू, उठू ! आ हटि कए बैसू !

नवल—कियैक ?

नाट्यकार—अरे वाह ! ई कोनो प्रश्न भेल ? हम पुछैत छी, ई सूतबाक जगह थिकैक ?

नवल—[उठैत] ओह ! से बात ? [नाट्यकार बैसैत छथि। नवल अंगेठी ल' कए अपन झोरा मे की ने खोजैत अछि। मुदा, कोनो इच्छित वस्तु नहि पैबाक भाव देखा कए ओ वेदी क एक कात बैसि जाइत अछि आ' नाट्यकार सँ कहैत अछि] अ-अच्छा, अहाँ त ओम्हरहि सँ एलहुँ कि नहि ?

नाट्यकार—ओम्हर सँ माने, केम्हर सँ ?

नवल—[आँगुर सँ प्रवेश द्वार दिसि देखाबैत] ओम्हर सँ माने, इयेह शहर दिसि सँ।

नाट्यकार—हँ।

नवल—[साग्रह] सुनीता कें देखने छलियैक ? [नाट्यकार कें विस्मित देखि] माने, सुनीता नीक अछि त ?

नाट्यकार—[आश्चर्य-चकित भए] अरे के सुनीता ? अहाँ

ककरा द' कहि रहल छी ?

नवल—कियैक ? वैह—आपन सुनीता। हँ,—जकर बाबूजी कें हम सब मिलि कए खून कैने छलियैक—सैह।

नाट्यकार—[खून क नाम पर नाट्यकार चौंकैछ एवं भयभीत स्वरें कहैछ] खून ? ककर खून ? अ-अहाँ खून कैने छी ? अहाँ खूनी छी, माने......

नवल—[बाधा दैत] नहि नहि। हम किछु नहि कैलहुँ। हम किछु जनिते नहि छलहुँ। विश्वास करू।

नाट्यकार—अहाँ एखनहि बाजलहुँ जे अहाँ खून कैने छी, फेरो कहैत छी जे......

नवल—अहाँ सबटा गप्प सुनब, तब ने बुझब !

नाट्यकार—[स्वगत] लगैछ, किछु नाटकीय उपादान मिलि सकैत अछि। सुनबा मे कोन हर्ज ?......[प्रकाश्य मे] हँ, अहाँ की ने कहैत छलहुँ ?

नवल—[आग्रहें कनेक अगुआ कए बैसैत] अहाँ सुनब ? हमर सबटा कथा अहाँ सुनब ?

नाट्यकार—अवश्य सुनब। अहाँ कहू ने......।

नवल—त सुनू ! [उठि कए ठाढ़ भ' कए किछ काल मौन रह-बाक पश्चात् कहैत अछि] हम, हमर नाम—नवल किशोर राय। जखुनका गप्प कहि रहल छी, तखन हम विश्व-विद्यालय मे साहित्य क अध्ययन करैत छलहुँ। कालिदास, विद्यापति आ' रवीन्द्रनाथ क पद-लालित्य पर विमोहित

छलहुँ। हुनका लोकनिक मधुमय भावोद्धिक तुंग-फेनोर्जित तरंग-राशि मे लीला-पोत जकाँ रभसैत छलहुँ। [कनेक अगुआ कए] ओहि समय हम नीचाँ नहि ताकैत छलहुँ। देखैत नहि छलहुँ आ' ने जनिते छलहुँ जे नीचाँ, बहुत नीचाँ मे समाज क सड़ल घाव सब पर सुगबुग करैत ओ कीड़ा सब नाचि रहल अछि, मजा ल' रहल अछि जे बाह्यतः सभ्य परिधान मे लोग सब कें चकाचौंध मे डालने रहैत अछि। हम नहि जनैत चलहुँ जे ओही दल मे सँ हमहूँ एक तेहने अधम छी। [कनेक थम्हि कए] आ' हमर बाबूजी शक्तिकुमार राय छलाह...... [वाक्य असमाप्ते रहि जाइछ। तखनहि बत्ती मिझा जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[जाहि कारी पर्दा सँ मंच क पश्चभाग क निम्नांश-स्थित ड्राइंग रूम झाँपल छल, तकरा ऊपर उठा कए पार्क क दृश्य कें झांपि देल जाइछ। और अन्हारहि मे ड्राइंग रूम मे दू व्यक्ति क कंठस्वर सुनना जायत]

शक्ति—ओफ! हम तबाह भ' गेल छी ई डपोरशंखी बात सब सुनैत-सुनैत—धर्म, पुण्य, आदर्श और भगवान! हा-हा! हा-हा! [अट्टहास] सब फूसि! हा-हा! हा-हा!

लखपति—अरे, युग बहुत बदलि गेल छेक; किन्तु......

शक्ति—किन्तु ! किन्तु की ? लोक चन्द्रमा पर टहलै लागल, मंगल पर पिकनिक करै जा रहल अछि आ' शनि और राहु क छाती पर जा कए फुटबाल मैच दैत गे। और अहाँ किन्तु-किन्तु करैत रहू।

लखपति—से त ठीके। विज्ञान सेह कहैछ; किन्तु......

शक्ति—फेर, वैह किन्तु। विज्ञान त बता देलक जे भगवान् नहि छथि। हुनक सब बात फूसि थीक। सृष्टि क एकमात्र सत्य थीक 'चांस।' एहि चांस कें जे चीन्हय सैह थीक असल व्यवसायी।

लखपति—शक्ति बाबू, हमरा लोकनिक कारबार मे 'चांस' नहि कहियो ऐलक ?

शक्ति—चांस कि आओत कप्पार। ई यावत् काल धरि हमरा लोकनिक पार्टनर हरिश्चन्द्र क अवतार श्रीमान् विनय बाबू कुर्सी पर अडिग रहताह तावत् धरि किछु नहि हैत।

लखपति—से की ? ओ त कोनो बाधा नहि दैत छथि।

शक्ति—बाधा ? बाधा और ककरा कहल जाइत छैक ? ओ कालाबजारी नहि करै देताह, मिलावट नहि करै देताह, घूस नहि देमै देताह, अफसर सब कें डाला, ह्विस्की वा कोनो माल नहि पठबै देताह। कहबाक सार ई जे ओ कोनो ससरी-फसरी नहि चलै देताह।

लखपति—ओ त आजकल अपनहि पी कए टगैत रहैत छथि। तैयो......।

शक्ति—ताहि सँ की ? जखनहि होश मे अबै छथि कि हुनका पाप-पुण्य और ओहि भगवान क भूत दबा दैत छन्हि और ओ हमर गंजन करबा लेल दम दाखिल भ' जाइत छथि।

लखपति— तखन ?

शक्ति—तखन की ? या त विनय बाबू अपना कें बदलताह या हमरा लोकनि कें कारबार बदलै पड़त।

लखपति—सैह ते। आजुक युग कतेक बदलि गेल छैक। हमरा लोकनि कें चाही टाका। हमरा सब कें पाप-पुण्य और नीक-बेजाय सँ कोन काज ?

शक्ति—काज त एहन चाही जाहि मे कम सँ कम लागत मे राता-राती बड़का धन-सेठ भ' जाय। आ' तकर बाद मौज, मजा, जीबन क रस आ'......

लखपति—किन्तु अहाँ जाहि व्यवसाय क बात क' रहल छी, तकर अतिरिक्त कि आन कोनो कारबार नहि भ' सकैछ ?

शक्ति—हमरा जनैत त एहन काज एके टा छैक आ' ओ छैक कालू सरदार क अड्डा। [स्वर कें कनेक कठोर करैत] किन्तु हम देखि रहल छी जे पुरान संस्कार सँ पिण्ड छोड़ौनाइ अहूँ क लेल कठिने भ' रहल अछि।

लखपति—नहि, से नहि शक्ति बाबू। मुदा इयैह जे एहि मे फायदे कतेक भ' सकैछ ! [अपेक्षा क भाव देखबैछ।]

शक्ति—की कहैत छी, लखपति जी, एहि मे अहाँ कें फायदा नहि सूझैत अछि ?

लखपति—फायदा त छैक, किन्तु से कतेक ?

शक्ति—से पूछैत छी ? [कहि कए उच्चस्वरें हँसैत रहैत छथि और ओहि हँसी क संग ताल राखि कए प्रकाश रेखा इतस्ततः विक्षिप्त जकाँ पतित भ' कए एक समय शक्ति क मुख पर आबि कए स्थिर भ' जाइत अछि ।]

लखपति—हँसलहुँ कियैक ?

शक्ति—[मुसकियाबैत] हँसलहुँ एहि लेल जे अहाँ आइये एतेक बड़का सेठ भ' गेलहुँ, कतेक तरह सँ मुनाफा लुटलहुँ, मुदा हमर एहि छोट-छीन अत्यन्त सरल इंगित कें नहि बुझि सकलहुँ । [किछु काल मौन रहैत छथि । पुनः पदचारणा करैत कहैत छथि] अहाँ फायदा क गप्प करैत छलहुँ, सैह ने ?

लखपति—हँ ।

शक्ति—फायदा मे फायदा इयैह जे........., [वाक्य कें किछु विलम्बित करैत तिपाइ पर राखल एकटा पत्रिका हाथ मे लैत छथि एवं दू-एकटा पन्ना उनटौला उत्तर कहैत छथि] अहाँ क नाम बदलै पड़त ।

लखपति—तकर अर्थ ?

शक्ति—[पत्रिका कें तिपाइ पर रखैत] तकर अर्थ इयैह जे अहाँ लखपति सँ करोड़ीमल भ' जायब ।

लखपति—[साग्रह] आँय ! से कोना ?

शक्ति—से हम एखनहि कहि रहल छी ; मुदा......[किछु सोचै लगैत छथि ।]

लखपति—मुदा की ? कहबा मे कोनो बाधा अछि की ?

शक्ति—नहि; से बात नहि। वैह विनय बाबू क लेल......।

लखपति—बिनय बाबू सँ कोन सम्बन्ध ?

शक्ति—हमर कहबाक तात्पर्य ई जे विनय कें एहि सब बात क खबर नहि हैबाक चाही। ओकर विश्वास नहि।

लखपति—से अहाँ निश्चिन्त रहू।

शक्ति—धन्यवाद। [किछु काल मौन रहलाक पश्चात] अहाँ काल्ह सरदार कें जनैत छियैक ?

लखपति—नहि।

शक्ति—काल्हू सरदार एक एहन लोग क नाम थीक, जे हँसैत-हँसैत चाकू चला सकैत अछि। काल्ह सरदार क देह क रंग कारी, मुँह पर गोटी क दाग। हमरा जनैत एहि संसार मे ओकर दुइये टा मित्र छैक—टाका आ' शराब।

लखपति—बुझलहुँ, ओ एकगोट कुख्यात गुण्डा अछि, जकरा सँ......।

शक्ति—[लखपति क कथन मे बाधा दैत] बहुँ हुँ, वैह ओकर एकमात्र परिचय नहि भेल।

लखपति - तखन ?

शक्ति—गुण्डा क संगहि ओ एकगोट चतुर तथा अनुभवी व्यवसायी सेहो अछि जे चास कें अलगट चिन्हि लैत अछि।

लखपति— तकर अर्थ ?

शक्ति—कहैत छी। [पदचारणा क' कए मंच क एक कोन सँ

दर्शक दिसि मुहँ घुमौने गम्भीर स्वरें कहैत छथि] पहिने हमर एकटा प्रश्न क उत्तर दियह।

लखपति—पूछू।

शक्ति—अहाँ कहियो दछिनबरिया पुल सँ आगाँ पैरे गेल छी?

लखपति—अरे वाह! हम त कैक बेर ओम्हर टहलै लेल गेल छी।

शक्ति—अच्छा। तखन ई बताउ जे कहियो सदय भ' कए ओतहुका कोनो भिखारी कें पाइयो देने छियैक?

लखपति—ठीक मन त नहि पड़ैछ, मुदा देनहुँ हैबैक।

शक्ति—ओ पाइ कालू सरदार क हाथ मे चलि गेल हैत।

लखपति – मतलब?

शक्ति—कालू सरदार भिखारी क व्यापार करैत अछि, शराब-गाँजा-भांग क व्यापार करैत अछि, पाकिटमारी, डकैती, बटमारी आ वेश्या सभ क......[थम्हि कए] रहै दियौक। मोट बात ई जे कालू सरदार एकटा अभिनव व्यापार करैत अछि, जकरा मे चांस आ' चंचला क अद्भुत गठबन्धन छैक।

लखपति—आश्चर्य!

शक्ति—कियैक?

लखपति—हम त एतबा दूर धरि सोचनहि नहि छलहुँ।

शक्ति—मुदा लखपति जी, असल गप क त एखन मात्र भूमिके भेल अछि।

लखपति—त असले गप कहू ने !

शक्ति—अच्छा, आब ई त बताउ जे अहाँ कि चाहैत छी जे एहि व्यवसाय क भार अहाँ क हाथ मे आबै ?

लखपति—[शक्ति क हाथ अपन हाथ मे लैत] की एहन भ' सकैछ ? तखन त हम सत्ते करोड़ीमल......।

शक्ति—सब भ' सकैछ। करोड़ीमल त अहाँ भेले छी।

लखपति—[अति उल्लसित होइत] सत्ते ?

शक्ति—मुदा जतबा गुड़ छिटबैक ततबे पिपड़ी आओत। आरम्भ मे प्रयोजन छैक टाका क।

लखपति—टाका हम देब। टाका क चिन्ता अहाँ नहि करी।

शक्ति—ठीक अछि, त हम कालू सरदार कें कहि दियैक जे ओ आन ककरहु सँ बात नहि करै ?

लखपति—हँ हँ, ओकरा से कहि दियौक। (उठैत) ठीक अछि। त एखन हम......।

शक्ति—अहाँ चललहुँ ?

लखपति—हँ, हमरा आज्ञा देल जाय। कालिह त फेर भेंट हैबे करत। [जाइत-जाइत पाछाँ घूमि कए] किन्तु सावधान ! एहि व्यवसाय मे खतरा सेहो कम नहि होइत छैक।

शक्ति—खतरा क लेल एसगरे कालू सरदार यथेष्ट अछि।

लखपति—बेस, बेस !

शक्ति—मुदा, एकटा बात मन राखब।

लखपति—की ?

शक्ति—विनय कें एहि बात क पता नहि चलै।

लखपति—बिनय हमरा लोकनिक करिये की सकैत छथि ?

शक्ति—नहि; से विनय कें चिन्हबा मे अहाँ कें देरी अछि।
ओकरा कारणें हम सब कहियो फँसि जा सकैत छी।

लखपति—तेँ हम कहैत छी जे अहाँ क प्रतिभा और हमर पूंजी
ई दूनू मिलि कए एक नबीन इतिहास क सृष्टि करत।

शक्ति—तेँ एहि पथ सँ विनयक हँटब आवश्यक।

लखपति—से त ठीके।

शक्ति—और एक बात छैक, जकरा हेतु हम विनय कें सह्य नहि
क' सकैत छी।

लखपति—से की ?

शक्ति—से हमर बाल्यकाल क एक बिडम्बना थीक लखपति जी,
जे एखन दुःस्वप्न जकाँ बुझाइछ। [किछुकाल मौन रहि
कए] हमर माय हमर जन्म क किछुकाल बादे चिकित्सा क
अभावें मरि गेल छलीह और हम जखन दस वर्ष क एकटा
दुर्बल शक्तिहीन बालक छलहुँ, तखनहि बाबूजी सेहो बन्धु-
लोकनिक प्रतारणा, दुश्चिन्ता तथा अन्न क अभावें तिल-
तिल घुलि कए एहि लोक सँ प्रस्थान क' गेलाह।

लखपति—तखन की भेल ?

शक्ति—तखन हमर पितृबन्धु सत्यभूषण बाबू आ' हुनक स्त्री
आशा देवी कृपा क', कए हमरा अपन प्रासाद क एक कोना
मे आश्रय देलन्हि। और ओत्तहि हम अपनहि बयसक

एक गोट बालक कें देखलहुँ, जकर रहन-सहन, बाल-चीस, पोशाक-परिच्छद—सब किछु देवोपम छलैक। किन्तु......

लखपति—किन्तु की ?

शक्ति—किन्तु हमरा ई विषमता हृदय मे शूल जकाँ गड़ैत छल। ओहि बालकक प्रत्येक सहज चेष्टाहुँ मे हमरा अपमान बुझि पड़ैत छल। हमरा बुझाइत छल जेना हम कुकुर होइ और हमरा आगाँ कृपा क रोटी क एकटा ओगरल-दकरल टुकड़ा फेंकि देल गेल हो। हमरा होमै जे हम ओहि नेना क ठोंठ दाबि कए...... [बाजैत बाजैत उत्तेजित भ' जाइत छथि।]

लखपति—ओ बालक की एखनहु जीवित अछि ?

शक्ति—वेह बालक थीक विनय, सत्यभूषण बाबू क सुपुत्र। एकरहि देखि कए हमरा अपना पर घृणा भेल, अपन गरीबी पर घृणा भेल, अपन धर्म, समाज, आदर्श, ईश्वर—सब किछु पर घृणा भेल आ' ओहि विपुल घृणा क पंकहि सँ जन्म लेलक हमर महत्वाकांक्षा और प्रतिहिंसा।

लखपति—फेर ?

शक्ति—फेर हम बड़ भेलहुँ छाती क भीतर एकटा बिढ़ाड़ि कें पोसने। हम सर्वदा सब विषय मे विनय सँ अगुआबै चाहैत छलहुँ और जखन हम आ' विनय व्यापार मे उतरलहुँ, तखनहि ओ सुयोग आयल।

लखपति—तखन अहाँ की कैलहुँ ?

शक्ति—करितहुँ की ? कुल पूंजी छलैक विनय क और हम एत्तहु एक साधारण श्रमिक जकाँ अपन बेतनमात्र पबैत छलहुँ। हम गदहा जकाँ दिनराति खटी आ' ओ......

लखपति—तखन ?

शक्ति—तखन हमर बुद्धि जागल। सम्पूर्ण कारबार कें पबलिक लिमिटेड कम्पनी मे परिणत क' देल गेलैक। ऋण-पैंच ल' कए किछु शेयर हमहूँ लेलहुँ आ' कम्पनी मे डाइरेक्टर बनि गेलहुँ।

लखपति—तकर बाद ?

शक्ति—तकर बाद क कथा क अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैछ। सुख और विलास मे पोषित विनय क दिनचर्या मे आराम, लापरवाही और खर्चीलापन छलैक।

लखपति—हुनका रोकैबला क्यो नहि छलन्हि ?

शक्ति—छलन्हि विनय क पत्नी, किन्तु सेहो अकस्माते यमलोक चलि गेल छलीह। और तखन विनय कें बढ़ाबा देबैबला जुटि गेलन्हि ई सेवक शक्तिकुमार राय। हुनक कला-प्रेम क धारा कें अन्हार गली दिसि मोड़बाक श्रेय हमरे देल जा सकैछ।

लखपति—तखन ?

शक्ति—एहि विलास क लेल दरकार छलैक टाका क। से टाका क लेल विनय क्रमें-क्रमें अपन शेयर सब बेचै लगलाह आ' हम कीनै लगलहुँ। और एही कारणें अहूँ शेयर कीनि कए आइ

डाइरेक्टर भ' सकल छी।

लखपति—ओ !

शक्ति—और विनय क पास जे थोड़-बहुत शेयर छैको से आइ नहि त कालिह् जैवे करतैक। किन्तु ताहू पर ओकरा मन सँ ईमानदारी क रोग नहि दूर भ' रहल छैक।

लखपति—विचित्र विरोधाभास !

शक्ति—विरोधाभास नहि; सह-अस्तित्व। विनय क व्यक्तिगत दुर्बलता और ओकर दृढ़ आरोपित पारस्परिक संस्कार। और एहि प्रकारें हमर सपना पूरा भेल। खैर; जाय दियह ओकर गप। एक दिन ओ स्वयम्......।

नवल—[नेपथ्य सँ] माय ! माय !!

शक्ति—हमर बेटा नवल आबि रहल अछि।

लखपति—अच्छा त हम एखन उठैत छी, फेर परसू......।

शक्ति—परसू नहि; सरदार कें कालिह साँझे धरि टाका द' देमै पड़तैक। जौं सौदा करबाक हो त......।

लखपति—अच्छा; त कालिह हम सम्पूर्ण टाका ल' कए आबि रहल छी।

[लखपति प्रस्थित होइत छथि। शक्ति लखपति कें विदा क' कए सोफा पर बैसि कए एकटा पत्रिका पढ़बाक अभिनय करैत छथि।]

नवल—[प्रविष्ट भ' कए] माय ! माय !! [शक्ति कें देखतहि

कनेक ठिठकि कए] बाबूजी ! आ-अहाँ, आ, अत्तेक जल्दी ? एखन त नवो नहि बजल अछि। [शक्ति पत्रिका कें राखि कए नवल दिसि देखैत छथि] अहाँ त साधारणतः एहि समय बाहरे रहैत छी।

शक्ति—[गम्भीरता पूर्वक] हम कखन की करैत छी, से तोरा पूछि कए करब ?

नवल—नहि, माने...... [केस पर हाथ फेरैत रहैत अछि।]

शक्ति—[बाम हाथ मे पहिरल घड़ी क दिसि देखैत] एखन नव बजल अछि। तों नव बजे घर सँ बाहर गेल छलह। आइ-कालिह की बारह घंटा पढ़ाइ होइत छैक ?

नवल—नहि, विश्वविद्यालय सँ त हम चारिये बजे छूटलहुँ।

शक्ति—तेयहु हाथ से पाँच घंटा रहैत छन्हु।

नवल—[घबड़ाबैत] ह-हम लाइब्रेरी दिसि गेल छलहुँ।

शक्ति—झूठ, एकदम झूठ बात। साँच-साँच बाजह, कतय गेल छलह ! तोहर माय दुलार क' कए तोहर ई हाल क' देने छथुन्ह। बाजह, कतय गेल छलह ? ककरा संग गेल छलह ?

नवल—नहि माने, हम लाइब्रेरी त गेले छलहुँ; किन्तु ओतय सँ दू-चारि मित्रक आग्रहें हम और एक गोटे क घर सेहो गेल छलहुँ।

शक्ति—नवल ! [कठोर स्वरें] तोहर मुँह-कान, भाव-भंगिमा---सब किछु कहैत अछि जे तों झूठ बाजि रहल छह। [बिराम] हम जनैत छी तों कतय गेल छलह ! [मंच

पर पद्चारणा करैत छथि। नवल व्याकुलता-पूर्वक शक्ति दिसि देखि रहल अछि। अन्त मे शक्ति मंच क एक कात मे आबि और रुकि कए] तों जनैत छह, तोरा लेल हमरा की की सुनै पड़ल आइ ?

नवल—[अगुआ कए शक्ति क पास आबि] मुदा बाबूजी, हम त किछु अन्याय नहि कैने छी।

शक्ति—नवल, हम बहुत कष्ट-पूर्वक तोरा संसार क गन्दापन क कारी हाथ सँ बाहर रखबाक चेष्टा करैत आबि रहलहुँ अछि।

नवल—से हम जनैत छी बाबूजी।

शक्ति—[बात काटि कए] आ' से जनितहुँ तों हमर आशा, अरमान आ' मान-सम्मान कें माटि मे मिलैबाक प्रयास क' रहल छह ? [प्रकाश-रेखा मंच क सब अंश कें अन्हार मे राखि केवल शक्ति आ' नवल पर पड़ि रहल अछि।]

नवल—हम अहाँ क कहबाक तात्पर्य नहि बूझि रहल छी।

शक्ति—[किछु काल मौन रहि, आन दिसि मुहँ घुमा कए] आइ आफिस मे हमरहि दू टा कर्मचारी तोरा बारे मे की कौचर्य क' रहल छल से जनैत छह ?

नवल—से हम कोना...... ?

शक्ति—ओ सब कहैत छल—

[शक्ति और नवल पर पड़ैत प्रकाश रेखा मिझा जाइत

अछि। विपरीत प्रान्त क प्रकाश-रेखा एहि मध्य मंच क दोसर दिसि ठाढ़ दू गोट किरानी पर पड़ैत अछि। ओ दूनु गोटे टिफिन खाइत-खाइत गप करैत छथि।]

पहिल – हे, एकटा गप जनैत छियैक ?

दोसर—की ?

पहिल—अहाँ नवल बाबू कें चिन्हैत छियैक कि नहि ?

दोसर—नवल बाबू, कोन नवल बाबू ?

पहिल—अरे, हमरा सभ क बड़ा साहब, शक्ति बाबू क सुपुत्र।

दोसर—अ, अच्छा। अहाँ हुनकर बात कहैत छी !

पहिल—हँ।

दोसर—त बात की छियैक ?

पहिल—बात त छैक बहुत र-र-रसीला !

दोसर—साँचे ?

पहिल—हँ-हँ। मुदा पहिने कहू जे अहाँ ककरहु कहबैक ने त ?

दोसर—कहू त भला, हम कहबै ककरा ? परंच गप त पहिने बाजू !

पहिल—[पावरोटी क टुकड़ा कें खाइत, केला क अन्तिम अंश मुहँ मे ठूँसि कए चिबेबाक अभिनय करैत अछि। तावत दोसर किरानी गप सुनबाक उत्कंठा सँ खैनाइ बिसरि कए ओकर मुहँ क प्रत्येक रेखा दिसि साग्रह देखि रहल अछि। पहिल किरानी केला क अन्तिम अंश कें गिळि कए डेकार

करैत कहैत अछि] त ओहि नवलकुमार कि नवलकिशोर कें हम आइ तीन दिन सँ एकटा छौंड़ी क संग एम्हर-ओम्हर घुमैत देखि रहल छी। [दाँत निपोड़ने] खूब वृन्दावन-लीला चलि रहल अछि !

दोसर—साँचे ? ओ लड़की देखबा मे केहन अछि ?

पहिल—देखबा मे त नीक छैक, किन्तु कपड़ा-लत्ता सँ तेहन उच्च घर क नहि बुझना जाइछ।

दोसर—माने, बड़ासाहब क पुतोहु बनबाक योग्य नहि ?

पहिल—अरे धत-धत्! ई सब त दू-दिन क मैना थीक। केकी किछु भेने दू टा कौड़ी बीगू, उड़ि कए चलि जायत।

[कहैत कहैत दुनू हँसै लगैत अछि। बत्ती मिझा जाइछ। अन्हार मे हँसी क शब्द सुनाइ पड़ैछ। अन्हारहि मे दुनू किरानी अदृश्य भ' जाइछ, किन्तु हँसी क प्रतिध्वनि सुनाइ पड़ि रहल अछि। शक्ति आ' नवल पर फेरो प्रकाश-रेखा पड़तहि हँसी क शब्द बन्द भ' जाइछ। शक्ति माथ क केश मे आङुर चलबैत छथि आ' नवल किताब कें दुनू हाथ सँ ठोर लग धैने ठाढ़ अछि।]

शक्ति—[किछुकाल मौन रहि, नवल दिसि देखैत] आब तोंही बाजह, एहन सब बात क चर्च सुनि कए कौन भद्र बाप क सम्मान बाकी रहतैक ?

नवल—[किछु सोचैत] बाबूजी ! [मूड़ी उठबैत मुहँ लग सँ पुस्तक हँटा कए] ओ सब जे किछु देखल, से अपनहि मनक आइना मे देखल। तेँ एहन बात अहाँ केँ सुनै पड़ल। [प्रकाश कनेक बेसी भ' जाइछ। नवल मंच क दोसर दिसि आबि कए कहैत अछि] रहल प्रेम क बात ! [कनेक थम्हि कए] बाबूजी, ताहि विषय मे हम अहाँ केँ एतबहि आश्वासन द' सकैत छी जे हम एहन कोनो काज नहि करब, जाहि सँ अहाँ क सम्मान केँ कोनो आघात पहुँचे। अहाँ एतबा विश्वास हमरा पर करू। [एहि मध्य नवल क नाम ध' कए भीतर सँ ओकर माय शोर पारैत छैक।]

शक्ति—[कनेक थम्हि कए] ठीक छैक। एखन तोँ भीतर जाह, माय शोर पाड़ैत छन्हु।

नवल—जे आज्ञा। [नवल निष्क्रान्त होइछ।]

शक्ति—[खूब जोर सँ हँसैत कहैत छथि] कहू त, केहन सुन्दर कर्त्तव्य-परायण पिता क अभिनय कैल ! [रेघा-रेघा कए] बेचारे नवल, हमर सुपुत्र ! [जी सँ आक्षेपात्मक शब्द करैत] कनेक प्रेम करत, सेहो नुका नहि सकल। [विराम] एखन जानै पड़त, कोन लड़की नवल केँ फँसैबाक चेष्टा क' रहल अछि। [कहैत कहैत जेबी सँ एकटा टाका क बंडिल निकालैत छथि और तकरा हाथ मे ल' कए लौकैत लौकैत कहैत छथि] मुदा, पहिने टाका आ' कालूसरदार क अड्डा क काज, तकर बाद आन किछु। [शक्ति क मुहँ पर तीव्र प्रकाश-

रेखा पड़ैछ। ओकर आँखि क क्रूरता स्पष्ट दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। आ' कि तखनहि समस्त मंच अन्हार भ' जाइछ।]

चतुर्थ दृश्य

[काल्लू सरदार क अखाड़ा। घर क विध्वस्तप्राय देवाल पर एक दिसि काली क एक चित्र एवं दोसर दिसि एक बन्दूक आ' भाला टांगल अछि। मूर्त्ति आ शस्त्रास्त्र क मध्य किछु अभिनेत्री लोकनिक चित्र साटल अछि। देवी मूर्त्ति क नीचा देवाल क काँटी सब पर किछु मैल कपड़ा एवं दू-तीन टा टोपी टांगल अछि। घर क एक कात मे एक टेबुल आ' दोसर कात एकटा चौकी राखल अछि। चौकी पर ओछाओल चादरि पर दू-तीनटा तकिया राखल अछि। दू-एकटा टूटल-भांगल कुर्सी-टेबुल लग पड़ल रहैछ।

काल्लू सरदार चौकी पर बैसल अछि। ओकर दुनू बगल मे दू आदमी ठाढ़ छैक आ गिलास मे ढारि-ढारि कए ओकरा शराब द' रहल छैक। टेबुल पर दू आदमी बैसल अछि। मन्नूराम टेबुल सँ कनेक हटि कए एक कुर्सी पर बैसल अछि।

अन्हार मे मद्यप सभ क चीत्कार, वाहवाही एवं नृत्य क मोहक ध्वनि सुनना जाइछ। नूपुर क हिल्लोल क संग हरमूनियम आ' तबला क वादन सेहो सुनल जाइछ। मंच पर प्रकाश

पसरितहि नर्त्तकी कें नाचैत देखल जाइछ। ओकर प्रति अंग सँ शृङ्गार क अभिव्यक्ति चूबि रहल अछि। नाच क संगे-संग गाना सेहो भ' रहल अछि।]

गीत

सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे
लहँगा ऐलै चुनरी ऐलै
चोलिया ऐलै हे
सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया एलै हे
बिछुआ ऐलै झुमका ऐलै
नथिया ऐलै हे
सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे
आ' दीयर जी के संग मे
समोलिया ऐलै हे
सैंयाँ जी के गाम सँ
डोलिया ऐलै हे

कालू सरदार—[जड़ित कण्ठें] वाह, वाह रे जान ! तोहर जवाब नहि भ' सकैछ ! [जेबी सँ टाका निकालि कए] हे,

इयैह ले [टाका पर एकटा चुम्मा ल' कए सुन्दरी क दिसि फेंकैत अछि। नर्त्तकी सलाम क' कए टाका लैत एक विशेष भंगिमा क संग सरदार क बगल मे आबि जाइछ। सरदार गर्व और तृप्ति क अनुभव क' रहल अछि। नृत्य पुनः वेग सँ जारी भ' जाइछ। वातावरण मे खूब मादकता और आवेश आबि गेल अछि। हठात् कालू सरदार हाथ सँ इशारा करैछ आ' नृत्य बन्द भ' जाइछ। नर्त्तकी एक दिसि सँ निष्क्रमण क' जाइछ। सरदार बाम दिसि बगल मे बैसल एक गुण्डा कें केहुनी सँ धक्का दैत अछि। धक्का खैलहु उत्तर ओकरा मुहँ सँ बकार नहि निकलैछ। ओ केवल मूड़ी उठा कए सरदार कें निहारि लैछ और पुनः मूड़ी खसा लैछ। सरदार अन्हराक वेश-धारी कोनो दोसरे गुण्डा कें अँगुरी सँ किछु इशारा करैछ।]

दोसर गुण्डा—जी सरदार !

कालू सरदार--की रौ, एकरा की भेल छैक ? जबाब कियैक नहि [हुचकी] दत अछि साला ?

दोसर गुण्डा—सरदार, ई साला तीन-तीन टा बोतल कें बिधवा बना चुकल अछि। ई जवाब कोना देत ?

[ई सुनितहि सब हँसि उठैत अछि। कालू सरदार क ठहाका सब सँ ऊपर सुनना जाइछ।]

कालू सरदार—[कठोर और गम्भीर स्वरें] आब· अजुका अपराधी सबकें बजाओल जाय।

मन्नू राम—[एक गुण्डा कें धकिया कए आगाँ ठेल दैत अछि] हे इयैह ।

कालू सरदार—की रौ लूल्हा, एहि बेर सोनपुर क मेला मे तों पाँचे टा नेना कें पकड़ि सकलें ?

लूल्हा—[आतंक क नाट्य करैत] सरदार, एहि बेर पुलिस क बड़ मुस्तैदी छलैक । और पुलिसे......

कालू सरदार—[कहि कए एक लाति मारैत] साला, पुलिस क बच्चा नहितन । खटबहीं तब ने काम बनतौ ? तों त जा कए ऐश मे डूबि जाइत हेबैं ।

लूल्हा—[डरैत] दोहाइ सरदार के; फेर एहन.........[अपन कान पकड़ि कए दाँत सँ जी कें काटैत] एहि बेर बकसि देल जाय...... ।

कालू सरदार—[और एक लाति जमबैत] हमरा त मन करैत अछि जे तोहर बुट्टी-बुट्टी काटि कए एखनहि कुक्कुर सब कें खुआ दी ।

लूल्हा—सरदार, हमरा एक बेर और मौका दियह; एके बेर ।

कालू सरदार—त जो; हमर दल आ' साज-सरंजाम ल' कए जो सिवेसर थान आ' हँसोथि ला गे सब नेना-भुटका कें । ई हम तोरा आखिरी चांस द' रहल छियौक । [लूल्हाक प्रस्थान । सरदार अंगुरी सँ दोसर गुण्डा कें अपना दिसि बजबैछ । ओ डरल-डरल आबि रहल अछि ।] आ' की रौ, रहमत अली, संसार भरिक सुन्नर छौंड़ी सब कि मरि

गेलक ? भगा कए अथवा बभा कए, जा धरि बढ़िया माल नहि एतौक ता धरि गाहक सब सँ कोन मुहेँ पैसा मांगल जा सकैछ ?

मन्नू राम—[चिकरैत] साला, बाजि नहि हैत छौक ! फूसि कियैक...... ?

रहमत अली—जी, साँझ खुन खूब सजि-धजि कए एक छौंड़ी ओहि सिनुरिया आम गाछ तर ककरहुँ प्रतीक्षा मे ठाढ़ि छल। हम पाछाँ सँ जा कए ओकर हार त छीनि लेलहुँ। [डाँड़ सँ निकालि कए सरदार क हाथ मे हार दैत] आ' हाथ क बाला पकड़ि कए खींचै लागलियैक कि ओ तेहन ने चेंचियावै लागल जे......

कालू सरदार—जे तौं साला ओकरा छोड़ि कए पड़ा ऐलें ?

रहमत अली—हँ सरदार !

कालू सरदार—[घूसा मारैत] सरदार क साला नहितन ! त तोरा ओकर गर नहि टीपि द' भेलौक ?

रहमत अली—देखलियैक जे ओम्हर सँ एक गुलगेंठ सन छौंड़ा दौड़ल आबि रहल अछि। आ' बाला एहन ने सक्कत छलैक जे कतबो तिरलियैक ओ निकलबे नहि करलैक।

कालू सरदार—[जोर सँ गरजैत] नहि निकलैत छलैक त भुजाली सँ चट दए ओकर हाथ काटि कए बाला निकालि लेतिहेँ। से कि बाला सँ ओकर हाथे क मोल बेसी छलैक ?

रहमत अली—[अपन कपार ठोकैत] या अल्ला ! ई हमरा

फुरबे नहि करलैक।

कालू सरदार—[ओकरा दिसि आग्नेय दृष्टि सँ देखैत] ईः, शैतान नहितन! [रहमत अली हँटि कए एक किनार मे ठाढ़ भ' जाइछ ।]

मन्नू राम—ई दोजख क कीड़ा एहने भूल परसूओ कैने छल। परसू जे हम बीस हजार टाका देने छलहुँ तेकर खिस्सा छैक। ओहि दिन एक सेठ क नवयुवक पुत्र अपन बहु आ बेटा कें ल' कए मोटर मे कतहु सँ आबि रहल छल। मोटर मे किछु भांगठ लागि गेलैक। हम एहि रहमत अली कें कहलियैक जे तों एहि नेना कें माय के कोरा सँ लुपकि कए भागि जो। ओ लुपकि कए भागबो कैल......।

कालू सरदार—तकर बाद ?

मन्नू राम—ओमहर हमरा ओ नवयुवक चीन्हि गेल; हमर चमकैत छूरा कें देखितहि कहै लागल जे हमरा पास एहि बैग मे बीस हजार टाका अछि; सब द' दैत छियह, मुदा हमर जान नहि ले मन्नू भाइ। किन्तु हमर छूरा तखनहि ओकर पेट मे ढुकि गेलैक आ' ओ छटपटा कए गिर पड़ल। तखनहि ई शैतान रहमत अली दौड़ कए चट द' ओहि बच्चा कें माय के गोदी मे द' ऐलैक।

कालू सरदार—[गरजैत आ' क्रोध सँ काँपैत] ई साला......।

रहमत अली—सरदार, ओहि नेना क माय क चेहरा हू-ब-हू हमर छोटकी बहिन सन छलैक। ओकर मासूम चेहरा आ'

आँखि क नोर हमरा नहि सहल गेल। ताहू पर जखन हम देखलियैक जे ओकर साँइयो नहि रहलैक त ओकर एक-मात्र आसरा ओहि नेना कें ल' कए हमरा नहि पड़ा भेल सरदार।

कालू सरदार—ईह! मसीहा बनै चलल्हाह अछि। कोढ़ा सँ तोहर खबरि लेल जेतौक। अरे, बहिन हौक कि बेटी, मौगियो जाति क क्यो विश्वास करैत अछि? हा-हा—हा-हा! मौगी जाति! नरक केरे कीड़ा सब! [मन्नू हाथ सँ इशारा करैत अछि। मंच सँ सरदार और मन्नू क अतिरिक्त सब चलि जाइत अछि।]

मन्नू राम—सरदार, सुनबा मे आयल अछि जे एहि पाली क समस्त युवक सब मिलि कए एक "मिथिला युवक संघ" कायम कैने अछि।

कालू सरदार—त ताहि सँ की?

मन्नू राम—ओ सब हमरा लोकनि कें उपाड़ि दैबाक प्रतिज्ञा कैने अछि। अपन-अपन मुहल्ला क रक्षा और शान्ति तथा समाज-सुधार क लेल ओ सब जी-जान लगा देत।

कालू सरदार—जी-जान द' देनाइ एतेक आसान नहि होइत छैक मन्नू। मुदा ई चिन्ता क विषय अवश्य भ' गेल अछि।

मन्नू राम—ओ सब जगह-जगह पोस्टर आदि सेहो लगवौने अछि। हे देखल ने जाउ......[ई कहैत जेबी सँ एक कागज निकालैत अछि। कालू कें कागज देखबैत आ' पढ़ैत—]

ई देखैत छियैक ? [कनेक रेघा कए बाजत] सभापति श्री नवल कुमार।

काल्हू सरदार—ई साले नवल कुमार जौं कुमारे छथि त माइ-बाप हकन्न क' कए कानतन्हि आ, जौं बियाहल छथि त हुनक बहु कें थोड़बहि दिन मे रौंड़ बनाबै पड़त...... ।

पंचम दृश्य

[शक्ति क प्रकोष्ठ मे शक्ति आ' लखपति बैसि कए गप क' रहल छथि। मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश कारी पर्दा सँ झाँपल अछि। प्रकाश-रेखा शक्ति और लखपति पर पड़ैत अछि ।]

शक्ति—अहाँ क संग ओहि दिन जे बात भेल छल, ताहि अनु-सार हम काल्हू सरदार क अखाड़ा गेल छलहुँ।

लखपति—[साग्रह] अच्छा ! त की देखलहुँ ?

शक्ति—देखलहुँ जे ओकरा पास जतबाक दैहिक शक्ति छैक ततबाक बुद्धि नहि छैक। अहाँ त जनिते छी जे आजुक संसार मे कोनो काज करबाक लेल तीन गोट वस्तु क संतुलित संयोग आवश्यक अछि।

लखपति—से की ?

शक्ति—शक्ति, बुद्धि, अर्थ—अर्थात् काल्हू, हम आ' अहाँ !

लखपति—बाह् बाह् ! से जौं होइ तखन त''''''

शक्ति—हँ; त हम जे कहैत छलहुँ से ई भेल जे काल्हू सरदार क

व्यवसाय क एखन जे रूपरेखा अछि, ताहि सँ ओकरा मनहि सन्तोष भ' जाय, मुदा हमरा लोकनिक पेट नहि भरत। तेँ हमर विचार जे·········[वाक्य केँ असमाप्त राखि किछु सोचै लग छथि।]

लखपति—हँ हँ, की विचार छल, कहल ने जाउ!

शक्ति—जौं हम सब एहि व्यवसाय मे उतरी, त सब दिसि एना सम्हारि कए उतरी जाहि सँ लाभक अङ्क लोभनीय भ' उठै।

लखपति—नहि बुझलहुँ, अहाँ की कहै चाहैत छी!

शक्ति—माने, ओना त काल्लू सरदार अपन बुद्धि-विवेचनानुसार सम्भाव्य सब तरहक विपत्ति सँ सावधान रहैत अछि।

लखपति—सम्भाव्य विपत्ति क अर्थ की? अहाँ पुलिस द' कहि रहल छी की?

शक्ति—हँ, पुलिस त अछिये, किन्तु मात्र पुलिसे टा नहि! अहाँ त जनिते छी, एहि शहर मे छोट मोट बहुतो काल्लू सरदार छथि, और ओहि दल सब मे मुहल्ला बाँटल रहैत छैक। यदि कोनो आन दलक लोग अपन सीमा क बाहर जा' कए किछु करै चाहैत अछि, त दुनू दल मे आपसी लड़ाइ भ' जाइत छैक।

लखपति—हँ; से त सुनैत छियैक।

शक्ति—ओना आन सब दल सँ काल्लू सरदार क दल बेसी होशियार अछि। तेँ पहिने त एकरा सब सँ हम सब व्यवसाय कीनि ली। आ' तकर बाद ताही मे किछु सम्प्रसारण करी।

लखपति—सम्प्रसारण क अर्थ ?

शक्ति—इयेह जे एहि दलक क्षेत्र बढ़ाबी आ' एहि मे किछु और उपयुक्त लोक जुटाबी। संगहि सन्तुलन रखबाक लेल तथा अखाड़ाक सब प्रकार क सूचना पबैत रहबाक लेल एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति कें कालू सरदार क पाछाँ लगौने रही।

लखपति—से कोना भ' सकैछ ? एहन लोक ओहि दल मे सँ भेंटत ?

शक्ति—अवश्य भेंटत।

लखपति—मुदा, ओहो लोक जे विश्वासी हैत, तकर की निश्चय अछि ?

शक्ति—लखपति जी, हम त पहिनहि कहने छी जे एखन धर्म, पुण्य, ईश्वर आ' विश्वास—सब किछु टाका सँ कीनल जा सकैत अछि। और अहाँ त लखपति छी, विश्वास त अर्थ क लोभें स्वयम आबि कए अहाँ क पैर चाटत।

लखपति—[हँसैत] हँ, से त ठीके !

[तखनहि 'मिथिला युवक संघ' क प्रतिनिधि लोकनि प्रवेश करैत छथि। संग मे नवल सेहो अछि। बुझा पड़ैछ वैह अगुआ हो।]

नवल—[शक्ति बाबू दिसि इंगित करैत] ई हमर बाबूजी छथि।

युवक लोकनि—[हाथ जोड़ि कए शक्ति बाबू दिसि साकांक्ष होइत] प्रणाम !

नवल—[लखपति बाबू दिसि इंगित करैत] और ई हमर काका जी अर्थात् बाबू जी क मित्र सेठ लखपति बाबू छथि।

युवक लोकनि—[पुनः हाथ जोड़ि कए लखपति बाबू दिसि साकांक्ष होइत] प्रणाम !

नवल—ई प्रकाश बाबू, मिथिला युवक संघ क महामन्त्री थिकाह और ओ दीपक बाबू, संघ क सहायक मन्त्री।

प्रकाश—आ' नवले बाबू हमरा लोकनि क संस्थाक सभापति छथि।

लखपति—अच्छा ! हम त बुझैत छलहुँ जे नवल विश्वविद्यालये टा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान पबैत अछि !

दीपक—जी नहि; समाज सेवो मे नवल भैया सब सँ आगाँ छथि।

शक्ति—त एहि संघ मे की काज हैत छैक ?

प्रकाश—संघ समाजक नव-निर्माण करत।

शक्ति—ई नव-निर्माण कोना हैत ?

नवल—एकरा लेल चोरी, डकैती, बटमारी, मिलाबट, काला-बजारी और घुसखोरी कें बन्द करबा देमै पड़त।

लखपति—एहि लेल संघ ? ई सब काज त पुलिसे क' रहल अछि। तखन...... ।

प्रकाश—केवल पुलिस वा केवल सरकार की क' सकैछ ? जनता क सहयोग क बिना...... ।

लखपति—त जनते एकरा लेल की क' सकैत अछि ?

नवल—बहुत किछु क' सकैत अछि। आइ प्रबुद्ध युवक-वर्ग प्रण क' लेने अछि जे समाज क छाती सँ एहि क्षय-रोग क कीटाणु क ध्वंस करबा लेल ओ अपन जीवन लगा देत।

लखपति—मुदा तों सब जाहि काज मे हाथ देने छह, से बड़ कठिन अछि।

नवल—से हम सब जनैत छी काकाजी। काज कठिन नहि हो त करबा मे मनो कोना लगतैक ?

शक्ति—[कठोर और उच्च स्वरें] किन्तु ई बहुते भयानक काज छन्हु। ओ अग्नि-पंथ थीक। जानि-बुझि कए आगि मे नहि कूदह नवल ! तोरा सब कें पूँजीपति, पुलिस आ सरकार सभक बिरोध मे काज करै पड़तह। से कि सम्भव छैक ?

नवल—एहि आगि मे किछु लोग कें अपन सर्वस्व क होम करै पड़तैक; किछु ललना कें एहि जौहर मे कूदै पड़तन्हि, अन्यथा समस्त समाजे एहि प्रचण्ड अग्नि-ज्वाल मे भस्मीभूत भ' जायत।

लखपति—बेस-बेस ! तोरा सब सँ तर्क नहि करबाक चाही। तों सब नवयुवक छह। एहि बयस क इयैह धर्म थिकैक। मुदा थोड़बेक आघात क पश्चात् तोरे दल मे सँ किछु जन भिका जैथुन्ह, किछु जन बहकि जैथुन्ह। सब दिन सैह भेल आयल छैक।

नवल—काकाजी, आब युग बदलि गेल छैक। हमरा सभ क संघ मे लौह-संगठन अछि। हम सब आँधी-तूफान, आगि-पत्थर, भूचाल, महानाश सब सँ लड़ि सकैत छी। केवल अपने लोकनिक आशीर्वाद चाही।

लखपति—आशीर्वाद हम सब सदति द' रहल छियन्हु।

प्रकाश—और आशीर्वाद रूप मे चन्दा सेहो देल जाउ। हमरा लोकनिक प्रार्थना जे अपने लोकनि एहि संस्था क संरक्षक बनि जाय। एक-एक सौ क' कए लागत।

लखपति—बेस-बेस; लिखलैत जाइ। हमर दुनू गोटेक दू सौ टाका नवल क हार्थे कालिह पहुँच जैतह।

प्रकाश—बेस त हमरा लोकनि कें आज्ञा देल जाय......।

लखपति—बड़ नीक लागल तोरा सभ क उत्साह देखि कए। अपन युवावस्था मन पड़ि गेल। बीच-बीच मे आबि कए संघ क प्रगति क समाचार देत रहिह।

['प्रकाश, दीपक आ' नवल प्रणाम करैत प्रस्थान क' जाइत छथि। लखपति आ' शक्ति बाबू युवक लोकनिक गमन-पथ दिसि एक टक निहारैत रहि जाइत छथि।]

शक्ति—हमरा त आश्चर्य लगैत अछि, ई सब कहिया भेल, कोना भेल? के एकरा सभ क माथ मे ई कीड़ा ढुकौलक। बाप रौ बाप!

लखपति—हमरा त किछु फुरिते नहि अछि। ई घरे मे कतय सँ प्रह्लाद टपकि पड़ल?

शक्ति—एकर अर्थ इयैह जे एखन सँ आरो सतर्क रहै पड़त
[ई कहि कए एकटा क्रूर दृष्टि सँ कनेक ऊपर दिसि तकैत रहैत छथि। लखपति शक्ति क दिसि प्रश्नात्मक मुख ल' कए देखैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइछ।]

यवनिका-पतन

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[यवनिका उत्तोलित होइछ। सुनीता मंच क पश्च भाग क ऊर्ध्वांश-स्थित पार्कक वेदी पर बैसल अछि। नवल ओही ठाम एक टा गाछ लग ठाढ़ अछि।]

नवल—सुनीता !

सुनीता—[अपन आंगुर क नह क दिसि तकैत] ऊँ !

नवल—एक टा बात जनैत छी सुनीता ?

सुनीता—की ?

नवल—बाबूजी कें हमरा दुनू क विषय मे सब किछु पता चलि गेल छन्हि।

सुनीता—नीके भेलैक। एक दिन त पता चलबे करतिहैक।

नवल—[असहिष्णु जकाँ] नहि, अहाँ किछु बुझते नहि छी।

सुनीता—हम सब किछु बुझैत छी।

नवल—की बुझलहुँ कहू त ?

सुनीता—बुझलहुँ जे अहाँ एक नम्बर क डरपोक प्रेमी छी। [कनेक हँसि कए] अहाँ त पुरुष छी, अहाँ एतेक चिन्तित कियैक भ' रहल छी ? अहाँ अपन बाबूजी क पास हमरा

ल' जा कए कहि नहि सकैत छी—बाबूजी ! हम अहाँ लेल दासी बनलहुँ ! [एतबहु पर नवल कें निर्वाक देखि] बुझलहुँ जे अहाँक बाबूजी अत्यन्त क्रोधी, अत्यन्त धनिक, अत्यन्त......की ने कहैत अछि सैह छथि । मुदा, हम सब त कोनो अपराध नहि क' रहल छी ।

नवल—[असहिष्णु जकाँ बात कहैत] से सब युक्ति गढ़ि कए हजारो बेर अपना कें समझौलहुँ, मुदा हमर बाबूजी कें नहि चीन्हैत छियैक । ओ एहि सब बातकें एकहि हँसी सँ उड़ा देताह ।

सुनीता—अच्छा ; हमरा ई त बताउ, ओ अहाँ क करिये की सकैत छथि ? भगा देताह ? सम्पत्ति छीनि लेताह ? [नवल कें निरुत्तर देखि कए] ओ तकर अर्थ, अहाँ सम्पत्ति हेरैबाक डरें...... ।

नवल—नहि सुनीता, नहि ! अहाँ सँ बढ़ि कए एहि संसार मे हमरा लेल आन कोनो सम्पत्ति नहि अछि । [बिराम] सुनीता, अहाँ त जनिते छी जे अहाँ हमर कविता छी । आ' कविता क अर्थ की होइत अछि जनैत छी ?

सुनीता—की ?

नवल—'क' सँ कान्ति, 'वि' विस्तृति और 'त, सँ तृप्ति ।

सुनीता—माने ?

नवल—'कान्ति' क अर्थ सुन्दरता, आ' सुन्दरता क अन्तिम आकार क परिमाप हम एकहि वस्तु सँ करैत छी ।

सुनीता--- की थीक ओ वस्तु ?

नवल—प्रेम, अहाँ क प्रेम सुनीता ! और सुनू—'विस्तृत' एहि लेल कहलहुँ जे अहाँ क मन क आँगन एतेक विस्तीर्ण विज-नता क चादर ओढ़ने अछि, जकर परिमाप हमर प्रेम क कान्तियहु सँ नहि कैल जा सकैछ। मुदा......

सुनीता—मुदा की ?

नवल---मुदा तैयहु एक टा अद्भुत तृप्ति पबैत छी अहाँ कें पाबि कए। [किछु काल मौन रहबाक पश्चात्] सुनीता ! अहाँ सम्पत्ति क बात करैत छलहुँ ने ? [पुनः बिराम] हमर बाबूजी हमरा लेल विशाल सम्पत्ति जमा कैलन्हि, हमरा सब किछु देलन्हि, मुदा दू टा वस्तु नहि द' सकलाह---शान्ति आ' तृप्ति, जे अहीं हमरा द' सकैत छी।

सुनीता—हम अहाँ कें की देब ? हम त अपनहि छी एक रिक्ता नारी ?

नवल—सुनीता, हम अहूँ सँ बेसी रिक्त छी।

सुनीता---अहाँ कें कथी क अभाव अछि ?

नवल---अभावक अभाव सुनीता। सब किछु पाबैत-पाबैत हम थाकि गेल छी, विश्वास करू ! अहाँ नहि जनैत छी, हमर विषाद कतय अछि।

सुनीता---कतय अछि ?

नवल—[म्लान रूपें हँसि कए] हम फाटल अंगा पहिरैत छी स लोग बुझैत अछि, ईहो गरीबी क शौक थीक, तमाशा

थीक। और हम नीक पहिरैत-ओढ़ैत छी, त ओ बड़प्पन क शान कहबैत अछि। सुनीता, देखैत छी जे एहि पृथ्वी पर धनिक, दरिद्र, मध्यवर्ग—क्यो नहि विश्वास करैत अछि हमरा। [विराम] की आबहु अहाँ कहब जे अहाँ हमरहु सँ रिक्त छी ?

सुनीता—हमरा की अभाव रहत कहू त ? जकरा पास किछु छैक, अभाव तकरहि होइत छैक। हमरा त किछु अछिये नहि। [विराम] जखन छोट छलहुँ माय तखनहि मरलीह, और हमर बाबूजी जीवित छथि, मुदा......

नवल—मुदा की ?

सुनीता—[विराम] एक दिन ओ छल जखन बाबूजी हमरा माय क अभाव कें बुझैये नहि दैत छलाह। आ' एखन वैह देव-प्रतिम बाबूजी दानवीयता क कोखि मे धसल जाइत छथि। समाज हुनका एक दिन जाहि सम्मान क आसन पर बैसौने छल, ओ एखन तकर एक-एक सूत बेचि कए शराब क बोतल क ढेरी लगा रहल छथि।

नवल—अहाँ एखनहि एत्तेक निराश नहि होउ सुनीता !

सुनीता—एक-एक समय सोचैत छी जे हमहूँ जौं दुनिया क और पाँचटा साधारण कन्या जकाँ अर्ध-सुन्दर, अर्ध-शिक्षित, अर्ध-सुखी होइतहुँ त कत्तेक नीक हैतिहैक ! अहाँ नहि जनैत छी हम प्रतिदिन एकटा दुःस्वप्न कें कोरा मे ल' कए घुमैत छी। नहि जनैत छी, कालिह की हैत—कालिह

बाबूजी कें कोन अवस्था मे देखब !

नवल—मुदा, अहाँ हुनका रोकि नहि सकैत छी ? हुनका घुरा नहि सकैत छी ओहि पतन क पथ सँ ?

सुनीता—हम त हुनका कतेक बेरि समझाबैत छी। दिन मे ओहो हमर सबटा बात मानबाक प्रतिश्रुति दैत छथि, मुदा राति होइत देरी पुनः……[किछु काल मौन रहि कए पुनः कहैछ] परंच इयैह बाबूजी पहिने जब राति कें घर घूरैत छलाह तखन……[वाक्य असमाप्त रहि जाइत अछि। बत्ती मिझा जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

[अन्हारहि मे यन्त्र संगीत क सहयोगें एकटा सुख श्राव्य गीत सुनना जाइछ। किछु काल क पश्चात् मंच क अग्रभाग आलोकित भ' उठत अछि। मंच क पश्च भागक ऊर्ध्व एवं अधो अंश—दुनू एकटा ड्राइंग रूम क आँकल दृश्य-पट सँ झाँपल रहत; मात्र अग्र भाग-स्थित विनय बाबू क प्रकोष्ठ मे सोफा-सेट, स्टैंडिंग लैम्प, टेबुल आ' एक कोन मे एकटा रेडियो शोभा दैत अछि। टेबुल क चारूकात कैकटा कुर्सी राखल रहैछ। सुनीता कें टेबुल पर बैसल एकटा पत्रिका उनटाबैत रेडियो-संगीत सुनैत देखल जाइत अछि। गीत क अन्तिम चरण होइत काल नेपथ्य सँ विनय क हाँक सुनाइ पड़ैत अछि।]

विनय—[नेपथ्य सँ] सुनीता, सुनीता ! नीतू बेटी, दरबाजा खोलह ।

सुनीता—आबि रहल छी बाबूजी ! [आनन्दित भए रेडियो बन्द क' कए पत्रिका कें टेबुल पर धरैत ओ मंच क प्रवेश-द्वार सँ अन्तराल मे जा कए पुनः विनय क संग घर मे प्रवेश करैत अछि ।]

विनय—की करैत छलह बेटी, रेडियो सुनि रहल छलह की ?

सुनीता—[विनय क हाथ सँ फाइल आ' बैग ल' कए टेबुल पर धरैत] हँ बाबूजी ! बहुत सुन्दर गीत होइत रहैक ।

विनय—[हँसैत] बेश, बेश !

सुनीता—[चारूकात निहारैत अछि जे बाबूजी कथीक इंगित क' रहल छथि । मुदा किछु नहि बुझि कए कहैत अछि] की बात थीक ? [विनय कें निरुत्तर भ' कए चुपचाप हँसैत देखि मनुहार क मुद्रा मे कहैछ] कियैक नहि किछु करैत छी बाबूजी ? [तैयहु विनय कें मृदु-मृदु हँसैत देखि] बाबूजी, कहू ने......

विनय—सुनीता ! आइ जे चाहैत छें, मांगि ले !

सुनीता—से कियैक बाबूजी, कोन खुशी से ?

विनय—अरे आइ तों कतेक नीक लगैत छें, से जनैत छें ?

[विनय कोट खोलि कए सोफा पर बैसैत छथि । सुनीता टेबुल सँ कोट-फाइल आदि ल' कए भीतर चलि जाइत अछि आ' सब किछु राखि कए पुनः मंच पर प्रविष्ट होइत अछि ।

विनय पुनः मुसकिया कए कहैत छथि] सत्ते कहैत छियौक, आइ तों जे साड़ी पहिरने छें, हमरा सब सँ पसिन्न अछि। एहि पोशाक मे सुन्दर सुन्दरतर भ' जाइत अछि। और—
[कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।]

सुनीता—और की बाबूजी ?

विनय—[बाष्प-भाराक्रान्त कण्ठ सँ] तोहर माइयो ठीक एहने साड़ी पहिरैत छलीह। [स्वप्निल भाव सँ] कतेक सुन्दर लगैत छलीह ओ! [सुनीता क दिसि ताकैत] सुनीता! शरत् काल क भिनुसरका ओस पर द' कए भगवती मन्दिर गेल छें ?

सुनीता—हँ बाबूजी !

विनय—तोहर माय ओहि मन्दिर क प्रतिमा सन लगैत छलीह। भोरे, पक्षी क कलरव सँ पूर्वहि स्नान क' कए पूजा क पुष्प-संग्रह करैत जखन ओ इयैह साड़ी पहिरि कए उद्यान क पथ पर सँ अबैत छलीह, तखन बुझाइत छल—हमर पूजा क घर कें शून्य क' कए एक साकार प्रतिमा घास क माथ पर पसरल किरण पर सँ पैदल चलि रहल हो! [कहैत-कहैत स्वप्नावेश मे विनय क आँखि निमीलित भ' जाइत अछि। सुनीता मूड़ी झुकौने ठाढ़ रहैत अछि। किछु काल दुनू गोटे मौन रहैत छथि। विनय यथार्थ क उपलब्धि क' कए अन्य स्वर मे कहैत छथि] अरे, हम त अतीत क चित्रे बनावै बैसि गेलहुँ। सुनीता बेटी, आइ तोहूँ निर्वाक निश्चल पाथर क

मूर्त्तिये बनि गेलें ? किछु जलपान नहि करैवें की ?

सुनीता—चलू ने ! हमर त सब किछु तैयारे अछि। अहाँ एखन धरि हाथ-मुहँ नहि धोयलहुँ अछि। चलू, चलू!

[सुनीता विनय कें चरिया कए ल' जाइत अछि। बत्ती मिझा जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[मंच अन्हार मे डूबल रहैत अछि, मुदा अन्हारहि मे सुनीता क कण्ठ-स्वर नेपथ्य सँ सुनना जाइछ। मंच क एक कात ठाढ़ भेल नवल क मुख पर प्रकाश-रेखा पड़ैछ।]

सुनीता—[नेपथ्य सँ] और तकर बाद क इतिहास त अहाँ कें किछु-किछु बुझले हैत। तकर बाद हुनक आँखि-भौं सब किछु बदलैत रहल—ओ दिन-दिन बदलि रहल छलाह। आरम्भ मे हम किछु नहि बुझने छलहुँ, किन्तु जखन बुझै लगलहुँ तखन हुनका समझैबाक बहुत चेष्टा कैल, मुदा व्यर्थ। ओ ओहि नरक क पंथ सँ नहि घुरलाह।

नवल—एहन आन क्यो नहि छलैक जे हुनका एहि विनाशक पंथ सँ घुरैबाक चेष्टा करतिहैक ?

सुनीता—नहि। बाबूजी सब दिन धर्म-भीरु तथा अन्तर्मुखी प्रवृत्तिक लोग रहलाह। हुनका एको टा मित्र नहि छन्हि। हमरा लोकनि आइ धरि हुनक कोनो मित्र कें नहि देखने

छियन्हि। ने क्यो हुनका सँ मिलबा लेल अबैत छन्हि आ' ने ओ कतहु जाइत छथि।

नवल—आश्चर्य !

सुनीता—ओ सिद्धान्ततः अपन कार्य-क्षेत्र और परिवार कें सर्वथा फराके रखबाक पक्षपाती छथि।

नवल—तखन की भेलैक ?

सुनीता—तकर बाद शराब क ऊपर जुआ क नशा आबि कए राज जमौलक। एवं ओहि दुनू क साम्राज्य चलैत रहल ता धरि जा धरि हमर आ' हमर बाबूजी क सोना क संसार दुःस्वप्न नहि बनि गेल !

नवल—तकर बाद की भेलैक सुनीता ?

सुनीता—तैयहु हम ई साड़ी पहिरैत रहलहुँ। ओ कखनहु घरियो कए नहि ताकैत छलथि हमरा दिसि—हमर पोशाक क दिसि; अतीत क दिसि—अतीत क स्वप्न क दिसि। और तकर बादो बाबूजी बहुत राति कें घर घुरैत रहथि···

[वाक्य असमाप्त रहि जाइछ कि तखनहि मंच क अग्रभाग आलोकित भ' उठैत अछि। एही मध्य घर क पाछाँ आँकल देवाल क स्थान पर एकटा कारी पर्दा झूलि रहल अछि। सोफा, टेबुल रेडियो आदि नहि रहैछ। घर मे सर्वत्र मलिनता क चिह्न स्पष्ट रूपें परिलक्षित भ' रहल अछि। घर मे मात्र दु-तीन टा कुर्सी आ' एकटा चटाइ देखना जाइछ। सुनीता कोनो फाटल साड़ी सी रहल अछि।]

विनय—[नेपथ्य मे विनय बेताळा चुटकी बजा कए गीत गबैत छथि।]

अजहुँ न ऐला मोर बलमुवाँ

सावन बीतल जाय

हायरे देखू, सावन बीतल जाय !

[प्रविष्ट भ' कए] सावन बीतल……[चीत्कार क' कए] सुनीता, सुनीता ! [फेरो धीरे]……बीतल जाय ! [पुनः चिकरि कए] सुनीता !

सुनीता—[सिलाइ छोड़ि कए उठैत] की ?

विनय—ई दरबाजा साँझे पहर कियैक बन्द क' देने छें ?

सुनीता—एखन त आधो राति बीति गेल अछि बाबूजी, आ' तकर अतिरिक्त, हम त दरबाजा बन्द नहि……

विनय—आह ! तों नहि बन्द केलें त आन के करत ?

सुनीता—हम बन्द करितहुँ त अहाँ ऐतहुँ कोना ?

विनय—आह ! बकथोथनि बन्द कर। ई सँझुका पहर देलें नशा कें बिगाड़ि……सावन……सावन [प्रमत्त जकाँ कहैत-कहैत अगुआ जाइत छथि एवं कुर्सी मे धक्का खा' कए] धत् ! [लाति मारि कए कुर्सी कें फेंकि दैत छथि।] ई कनटर के राखलक अछि एतय, कत्तेक बेरि कहने छी जे……[कहैत कहैत हठात् पैर मे किछु देखबाक अभिनय क' कए] ईह ! देखह त, देखह त, ई कनटर हँटाबै मे कत्तेक खून बहार भ' गेल अछि !

सुनीता—कहाँ किछुओ भेल अछि बाबूजी ?

विनय—तोरा त सूझते नहि छौक ! देखैत नहि छें, कतेक खून बहि रहल अछि। [कनेक अगुआ' कए] हुँ, कतेक खून ! [कनेक माथ कें झुका कए निम्न स्वरें] खून, ऐ खून ! सुनह, सुनह, सुनह ने ! [फेर मुँह क दुनू कात हाथ द' कए जोर सँ] खून ! तों सुनि रहल छहक ? हमर खून भेल अछि। [फेर कानैत-विलपैत] ई कनटर, बुझलहुँ कि नहि, ई कनटर हमर खून कैलक अछि। हे, हे, हम मरि गेलहुँ। [हुचकी] हँ मरलहुँ, आ' तकर बाद······

सुनीता—ककर बाद, के मरलैक ? की सब बकि रहल छी बाबूजी ?

विनय—[तर्जनी हिला कए] नहि, हम बकि [हुचकी] नहि रहल छी। साँचे [हुचकी] कहैत छियौक, ई सब मिलि कए हमरा खून कैलक अछि। आ' तकर [हुचकी] बाद दोस्त, हँ हमर दो-ओ-स हमरा कहलक,.........[कनेक अगुआ कए काने-कान कहबाक भंगिमा मे] की कहलक जनैत छें ?

सुनीता—[मुहँ घुमा लैत] नहि।

विनय—[क्रुद्ध भए] अँए, तों हमरा घृणा करैत छें ? [शिशु जकाँ रुसि कए कानैत] जो, तोरा हम नहि कहबौक !

सुनीता—[अश्रुरोध करैत] नहि बाबूजी, हम अहाँ कें घृणा कियैक करब ? जे सुनीता अहाँ कें घृणा करैत छल, हम

तकर गर घोंटि देलहुँ अछि। कहू ने, की कहैत छलहुँ।

विनय—[हँसैत] हे, हे ! हम देखैत छलियौक तों सुनै चाहैत छें वा नहि। [विराम] असल मे [हुचकी] नीतू बेटी, हमरा कानै नहि अबैछ, हसैयो नहि अबैछ, विश्वास कर !

सुनीता—हँ बाबूजी, हम विश्वास करैत छी।

विनय—जनैत छें, हम जखन तोरे बयसक छलहुँ, तखन बाबूजी मरि गेलाह। हम नहि [हुचकी] कनलहुँ। तोहर माथ जहिया तोरा छोड़ि कए बिदा भेलीह, हम तैयहु नहि कनलहुँ। आ' दू टा कारी हाथ, बुझलें, दू टा हाथ—जखन हमर सबटा सम्पत्ति छीनि लेलक, हम तखनहुँ नहि...... ।

सुनीता—बाबूजी !

विनय—हँ रे, हम सत्य कहैत छियौक। हमरा के सब ने धक्का देलक। धक्का खा कए हम जतय खसलहुँ ओ छल एकटा कसाइखाना, जतय लोग अपन मांस बेचि-बेचि कए खूब कमा सकैत छल। बुझलें ? [सुनीता उत्तर नहि द' कए नोर नुकबैत माथ नीचाँ करैत अछि। विनय ताहि दिसि लक्ष्य नहि करैत कहैत छथि] हम देखलहुँ, युवती सब ओतय खूब कमबैत छल। हम एकटा दसटकही लड़की सँ पुछलहुँ, ई कोन देश थीक ? ओ कहलक [कहि कए उच्च स्वर मे हँसैत, गिरैत, फेरो अपना कें सम्हारैत] ओ की कहलक जनैत छें ?

सुनीता—की बाबूजी ?

विनय—ओ कहलक, ओहि जगह कें संसार कहल जाइत छैक।

कह त केहन सुन्दर नाम थीक—सं-सा-र ! [किछु काल मौन रहि कए] हम कहलहुँ, हमहूँ बेचब मांस। तखन कसाइ बाजल, "तोहर मांस सड़ि गेलह, नहि चलतह। तखन हँ, आत्मा बेचह त किछु मिलि सकैत छह।" तखन हम सब किछु बेचि-बेचि कए तकर बदला मे लेलहुँ [पाकिट सँ बोतल निकालि कए] हे ई ! [कहि कए बोतल कें चुम्मा ल' कए कनेक पीयैत छथि कि सुनीता चट द' कए हुनक हाथ सँ बोतल छीनि कए फेंकि दैत अछि।]

सुनीता—बाबूजी ! उठू आ' चलू एतय सँ, गप त भ' गेल। [कहैत-कहैत सुनीता विनय क हाथ ध' कए जोर क' कए भीतर ल' जाइत अछि।]

विनय—[जाइत-जाइत] नहि-नहि, हमर सबटा गप कहाँ शेष भेल अछि ? सब कें कहाँ......[कहैत-कहैत सनीता क संग प्रस्थित होइत छथि। मंच अन्हार भ' जाइछ।]

चतुर्थ दृश्य

[अन्हारहि मे सुनीताक क्रन्दन क शब्द सुनना जाइछ। मंच क्रमशः आलोकित होइछ। सुनीता कें पार्क क वेदी पर बैसल देखना जाइछ। नवल वेदी क पाछाँ ठाढ़ रहैत अछि।]

नवल—सुनीता, अहाँ एतेक निराश नहि होउ ! अहीं त हमर शक्ति छी।

सुनीता—एहि जीवन सँ लड़ैत-लड़ैत ताकते ओरा गेल अछि। एखन बाँचल छी—मरि नहि होइछ तें। हम अहाँ कें की शक्ति देब ?

नवल—किन्तु सुनीता, अहाँ क पिताजी कोनो एकटा गम्भीर चक्र-चालि क शिकार छथि। जीवन हुनका धोखा देने छन्हि और ओहो तें शराब पीबि कए जीवन कें धोखा देमै चाहैत छथि। मुदा ई भेल आत्महनन क पथ। एहि से मनुष्य क रीढ़ क हड्डी टेढ़ भ' जाइत छैक।

सुनीता—मुदा की करू ? कोनो पथे नहि देखाइ पड़ैछ।

नवल—पथ छैक सुनीता! दृढ़ आस्था क संग प्रयास करै त मनुष्य अपन अवस्था परिवर्त्तित क' सकैछ। अहाँ कें संघर्ष करै पड़त ; निर्मम दुर्भाग्य सँ अहाँ कें प्रतिशोध लेमै पड़त।

सुनीता—से भ' सकैछ ?

नवल—अवश्य ! आ हमहू सब त सैह क' रहल छी। अपन समाज क छाती पर सँ समस्त दुर्नीति कें उन्मूलित करबा क लेल कटिबद्ध होमै पड़त। संसार कें शान्तिमय बनवै पड़त जतय ने ककरहु पतन हैत आ' ने दम्भ क उत्थान।

सुनीता—[साग्रह] की हमहूँ एखन कोनो काज में लागि सकैत छी ?

नवल—अवश्य ! आइ भारत क नारी जे नीक काज करत, कालिह दुनिया सैह पथ अपनाओत और आइ नारी लोकनि जे करती, कालिह समस्त सन्तान ताही पथ पर चलै लागत।

तँ, अहाँ आ' अहाँ सन शक्ति सब एहि सत्कर्म मे नहि लागै त धर्म क चक्र अधर्म कें पीसत कोना ?

सुनीता—तखन हमहूँ आइ सँ अहाँ सभ क संग काज करब।

नवल—अवश्य करू।

सुनीता—मुदा, एहि लेल हमर परीक्षा नहि लेल जायत ?

नवल—सुनीता, मनुष्य क परीक्षा काल क धधकैत आगि मे होइत छैक। और अहाँ त......[तावत् त्रस्तव्यस्त जकाँ प्रकाश आ' दीपक क प्रवेश। ओ सब हपसैत-हपसैत प्रविष्ट होइत अछि] की बात थीक दीपक ? की भेलह ?

दीपक—नवल भाइ, एतेक दिन क सतर्कता क बाद बुझाइछ जे आइ एकटा बड़का अपराधी रंगले हाथ पकड़ल जायत।

नवल—ई अपराधी थीक के ?

प्रकाश—वैह, रामभरोस राम।

नवल—ओ त हमरा सभ क संरक्षक मे सँ छथि !

दीपक—ओ रक्षक की रहताह, ओ त भक्षक छथि। हजार-हजार शिशु क मुहँ क खाद्य छीनि कए अपन गुदाम क मोटायल मूस सब कें खुआबैत छथि।

प्रकाश—और, जाहि सँ हमरा सभ क नजरि हुनका पर नहि जाइन्ह ताहि लेल संरक्षक बनि गेल छथि। संगहि ओ त्राण-समिति क सभापति सेहो छथि ! मुदा हमरा आइ एक हफ्ता सँ सन्देह भेल और हम दुनू गोटे नजरि रखै लगलहुँ।

दीपक—आ' आइ हुनका रंगल हाथे पकड़बाक सुयोग आयल अछि।

नवल—शाबाश !

दीपक—गरीब लोकनिक लेल प्राप्त औषधि तथा शिशु-खाद्य आदि चोरा कए काला बाजार मे बेचबाक लेल कल्याण-केन्द्र सँ हटाओल जा रहल अछि। हम सब जौं जल्दी पहुँचि जाय......

प्रकाश—जल्दी ! समय एकदम नहि अछि......

नवल—तखन चलैत चलू—[दीपक और प्रकाश वेग सँ प्रस्थान करैत अछि। नवल हठात् सुनीता दिसि देखैत] अहाँ काज करै चाहैत छलहुँ ने ?

सुनीता—[उच्छ्वसित कण्ठें] हँ, अवश्य।

नवल—त अहाँ जाउ थाना दिसि आ' पुलिस कें संग ल' कए सोझे कल्याण-केन्द्र चलि आयब !

सुनीता—बेस, किन्तु......

नवल—एखन किन्तु-परन्तु क अवसर नहि अछि सुनीता ! परीक्षा आरम्भ भ' गेल अछि।

[नवल आ' सुनीता विपरीत दिशा मे निष्क्रमण करैत अछि। प्रकाश नवल क संग चलि जाइछ। मंच अन्हार भ' जाइछ]

———

पंचम दृश्य

[सर्वत्र अन्हार पसरल अछि। अस्पष्ट एवं आवेशपूर्ण शब्द तथा कैक गोटे क चंचल पग-ध्वनि सुनना जाइछ। पश्चात् कनेक मन्द प्रकाश जकाँ होइत अछि। मंच क पश्च-भाग क दुनू अंश कारी पर्दा सँ झाँपल अछि। मंचक अग्र-भाग क एक कोन मे एक कूड़ादानी और तकर पाछाँ एक टिमटिमाइत लाइटपोस्ट देखना जाइछ। मंच क अग्रभाग क आन अंश मे पुनः अन्हार पसरि गेल अछि। प्रकाश-रेखा किछु इतस्ततः धावमान लोकक पैर पर पड़ैत अछि।]

रामभरोस—[प्रविष्ट भ' कए] मन्नूराम ! ऐ मन्नूराम !

मन्नू राम—[विपरीत दिशा सँ मंच पर प्रविष्ट होइत अछि] किछु कहैत छी रामभरोस बाबू ?

रामभरोस—अरे और की कहब ? और कतेक देर लागतइ काज शेष करबा मे ?

मन्नूराम—अहाँ घबड़ाबैत कियैक छी ?

रामभरोस—नहि-नहि, तों सब नहि बुझबहक ! जल्दी सबटा दवा लॉरी मे चढ़बा दहक, नहि त......

मन्नूराम—नहि त की हैत ?

रामभरोस—[दुनू हाथ सँ एकटा विशेष मुद्रा. प्रकट करैत] तोहर आ' हमर हाथ मे हथकड़ी लागि जैतह।

मन्नूराम—से एत्तेक आसान नहि छैक।

रामभरोस—जनैत नहि छह, एतय छौंड़ा सभक एकटा संघ बनल अछि। ओ सब हमरा सभक कारबार बन्द करै चाहैत अछि।

मन्नूराम—अच्छा! पहिने ई त कहू जे अहाँ ओकरा सब कें चन्दा देने छियैक कि नहि ?

रामभरोस—हँ, से देने त नीक जकाँ छियैक, मुदा ताहि सँ की ? ओहि दिन ओ सब हमरहि मित्र एक इनकम टैक्स अफसर कें पकड़ा देलक। ओहो त ओकरा सभक संघ में चन्दा देने छलथि।

मन्नूराम—[हँसैत] ओ पकड़াओल, कारण ओकरा पास घूस लेबा क बुद्धि त छलैक, किन्तु अपन रक्षा करबाक तागत नहि छलैक।

रामभरोस—से सब त बुझलहुँ। किन्तु हमरो जे ओ सब नहि पकड़त, तकर कोन......

मन्नूराम—तकर भार हमर अछि। अहाँ निश्चिन्त रहू!

रामभरोस—[चिन्तित मुखें] तैयहु जल्दी-जल्दी काज हैबाक चाही।

मन्नूराम—अच्छा, हम देखि रहल छी। [कहैत-कहैत जाहि दिशा सँ प्रविष्ट भेल छल, ताही दिशा मे प्रस्थित होइत अछि। नेपथ्य मे दूर सँ मन्नूराम क चीत्कार सुनल जाइत अछि।] ऐ रहमत अली! जल्दी कर! कनेक हाथ चला कए काज नहि करि हैत छौक ? आँय ? हे रौ, तोरे कहैत छियौक—जल्दी-जल्दी पेटी चढ़ा!

[एम्हर स्वल्पालोकित मंच पर सँ एकदम कारी पोशाक पहिरने किछु लोक दवा क पेटी नेने निःशब्द रूपें चलल जाइत देखना जाइछ। ओर रामभरोस राम एकटा सिगरेट पीयैत मंच क एम्हर सँ ओम्हर आ' ओम्हर सँ एम्हर टहलैत रहैत छथि एवं बीच-बीच मे बाहर क दिसि तकैत रहैत छथि। तावत् धीरे-धीरे निःशब्द रूपें नवल और प्रकाश मंच पर प्रविष्ट होइत अछि। प्रकाश-रेखा नवल आ' प्रकाश पर पड़ैत अछि। ओ दुनू झूड़ादानी क पाछाँ नुकायल रहैत अछि।]

मन्नूराम—[प्रविष्ट भ' कए] रामभरोस बाबू !

रामभरोस—[चौंकैत] के ? [मन्नूराम कें देखि आश्वस्त भए] ओ, मन्नूराम ! बाजह, की बात थीक ?

मन्नूराम—काज भ' गेल। सब ठीक अछि। हे, इयेह लेल जाउ तीस हजार ! ग्राहक करार क मोताबिक आधा दाम द' गेल अछि और शेष माल पहुँचला उत्तर द' देत।

रामभरोस—[टाका लैत छथि आ' सतृष्ण नेत्रें नोटक पुलिन्दा कें उनटा-पुनटा कए देखैत चादरि तर मे नुका लैत छथि। हुनक मुख पर अतिशय प्रसन्नता तथा आँखि मे चमक देखना जाइत अछि। ओ कनेक कर्कश और गम्भीर स्वर मे बाजि उठैत छथि।] देखह, माल पहुँचैबाक बात रहैक नवे बजे। एखन त दस बजि गेलह अछि! तेजी सँ जैबाक चाही।

मन्नूराम—त हमरा लॉरी ल' कए जाय दियह। हम संग मे रहमत अली कें ल' लैत छी। अहाँ एत्तहि रहू। माल पहुँचा कए लगलहि घंटा भरिक भीतर हम अहाँ कें टाका पहुँचा दैत छी।

रामभरोस—[मन्नूराम क संग प्रस्थान-पथ क दिसि अग्रसर होइत-होइत] ठीक अछि, तोंही सब जा! मुदा, जल्दीये आबिह, नहि त हम चिन्ता मे रहब।

मन्नूराम—[प्रस्थित भ' कए नेपथ्य सँ] अहाँ चिन्तित नहि होउ! हम इयैह गेलहुँ आ' ऐलहुँ। चल रहमत! [लॉरी क भोंपू और घड़घड़ाहट सुनना जाइछ। रामभरोस बाबू नोटक पुलिन्दा चादरि तर सँ निकालि कए पुनः लुब्ध दृष्टियें उनटा-पुनटा कए देखैत छथि और फेरो चादरि तर नुका लैत छथि। किछु सोचि कए आगाँ बढ़ैत छथि, मुदा ठिठकि जाइत छथि।]

रामभरोस—हे भगवान्! आब तोंहीं लाज बचाबह! [तावत् प्रकाश-रेखा कूड़ादानी लग नुकायल नवल और प्रकाश पर पड़ैत छैक। ओ दुनू परस्पर आँखि सँ किछु इंगित करैत अछि। प्रकाश खोंखैत अछि। रामभरोस चकित भ' कए बाजि उठैत छथि।] के? के खोंखल? [ककरहु नहि देखि] आश्चर्य!

नवल—[कूड़ादानी क पाछाँ सँ प्रकाश क संगहि उठि कए राम भरोस दिसि अगुआबैत] आश्चर्य! सत्ये आश्चर्य!!

रामभरोस—के ? के छें तों सब ?

नवल—अरे, अरे, अरे रामभरोस बाबू, अहाँ एत्तेक घबड़ाबैत छी कियैक ?

रामभरोस—[भय-भीत मुद्रा मे]. हँ, नहि, हँ ! से त ठीके, मुदा तों...... ?

प्रकाश—अहाँ हमरो सब कें बिसरि गेलहुँ ? एत्तेक जल्दी ?

रामभरोस—ओ ! [हँसबाक चेष्टा करैत] नवल बाबू, प्रकाश बाबू, अहाँ सब छी ? हे-हे ! हे-हे ! हम सोचल जे कोनो लुच्चा-लफंगा सब हैत ! [व्यस्तता देखा कए] त अहाँ सब एतय की क' रहल छी ? चलू ने हमर दरबाजा दिसि। कैकटा बातो करबाक अछि। आ कनेक चाहो......

नवल—[बाधा द' कए] उँ हुँ-हुँ; रामभरोस बाबू ! एत्तेक चालाक बनबाक चेष्टा जुनि करू !

रामभरोस—[कठोर स्वरें] की कहैत छी नवल बाबू ?

प्रकाश—नवल भाइ कहैत छथि जे ओ चाह नहि पीताह। ओ त अहीं कें चाह पीबा क लेल निमन्त्रण देबा लेल आयल छथि।

रामभरोस—हमरा ? चाह क लेल ? मुदा कतय ?

नवल—जेलर साहब क अतिथि-शाला मे !

रामभरोस—[चौंकैत भयभीत स्वर मे] माने ? अहाँ की कहैत छी, हम त किछु नहि बुझलहुँ ।

नवल—अहाँ बुझलहुँ त अवश्ये। आ' जतबाक कसर रहि गेल

से ओही ठाम समझा देल जायत।

रामभरोस—मुदा ई सब की थीक ? की भ' रहल अछि ?

प्रकाश—सैह भ' रहल अछि, जे पहिनहि होयब उचित छल। नहि जानि, प्राण-कोष क कत्तेक औषधि एहिना अहाँ पार कैने हैब और कत्तेक असहाय लोक कें परलोक पठौने हैब।

रामभरोस—ओ बुझलहुँ। मुदा, नवल बाबू ! कनेक हमरो दिसि त देखू! बिना कोनो उनट-पुनट कैने हमरा लोकनिक दिन कोना चललैक ?

नवल—अहाँ कें कोनो गत्तर मे लाज नहि होइत अछि ? प्रसिद्ध धनी-मानी, प्राण-समितिक सभापति, भूतपूर्व मंत्री और तकर ई हाल ?

रामभरोस—[कनेक आत्म-नियन्त्रण करैत कठोर स्वरें] हमर अपराध क कोन प्रमाण अछि ? हैत एको टा साक्षी ?

प्रकाश—प्रमाण ? प्रमाण अछि अहाँ क हाथ महक नोट क पुलिन्दा। और हमरा सब सँ बढ़िया साक्षी कतय भेंटत ?

रामभरोस—हमरा हाथ से टाका ऐबाक बहुत कारण भ' सकैछ।

प्रकाश—आ' ओ लादल लॉरी ?

रामभरोस–लॉरी त निकलि गेल। ओ कि अहीं लेल बैसल अछि ?

नवल—अहाँ फेरो भूल क' रहल छी। संघ क अनेक नवयुवक लोकनिकें ल' कए दीपक सम्पूर्ण रास्ता कें ईंटा-पाथर आ' लकड़ी क कुन्दा सँ घेर देने अछि। अहाँ क लॉरी निकलि नहि सकैछ। अहाँ क सब सहयोगी पकड़ा गेल हैताह।

रामभरोस—ओ सब अपन जान द' देत।

नवल—जान दइयो कए क्यो जान नहि बचा सकैछ। थाना चलू ने। सब सँ अहाँ कें ओत्तहि भेंट भ' जायत। चलल ने जाउ!

रामभरोस—और जौं हम नहि जाय?

प्रकाश—[बगल सँ बढ़ि कए रास्ता रोकैत] त अही ठाम ठाढ़ रहू। पुलिस त आबिये रहल हैत। जखन हथकड़ी पड़त तखन बुझबैक।

रामभरोस—[कनेक मौन रहि कए मधुर स्वरें] हम अहाँ सभक काज क प्रशंसा करैत छी। सत्ते कहैत छी, जे पुलिस नहि क' सकल से अहाँ सब क' कए देखा देलहुँ।

प्रकाश—पुलिस क मुहँ मे त अहाँ मिठाइ ठूँसने रहियैक। तखन ओ सब बाजतिहे कोना?

रामभरोस—[अनुच्च स्वरें हँसैत] कही त अहूँ सब कें आरो किछु टाका······

प्रकाश—माने? घूस?

रामभरोस—नहि-नहि; चन्दा।

नवल—[कठोर स्वरें] रामभरोस बाबू! अहाँ क देल चन्दा पर हम सब थूकैत छी।

रामभरोस—[मनैबाक चेष्टा करैत] किन्तु पहिने कनेक सोचि लियह। संयोगे सँ लोक एना टाका पाबैत अछि। अहाँ सब चाही त एहि टाका सँ अपन बहुतो अभाव दूर क'

सकैत छी।

प्रकाश—हमरा लोकनि कें पापक टाका नहि चाही।

रामभरोस—पापक कोन बात ? हम त अपनहि द' रहल छी आ' एहि ठाम क्यो देखियो त नहि रहल अछि ! अहाँ लोकनि कनेक सहयोग दी त हम अहाँ क संघ क कोनो युवक कें बेकार नहि रहै दी।

नवल—[व्यंग्य-पूर्वक] एँ यौ, अहाँ कें बेकार सभक एत्तेक चिन्ता कियैक रहैत अछि ?

रामभरोस—रहत कियैक नहि ? नेता क्यो ओहिना भ' जाइछ ?

प्रकाश—वाह रे नेता !

रामभरोस—देखू नवल बाबू, एत्तेक मार-पेंच हम नहि बुझैत छियैक। हम पाँच हजार देबा लेल तैयार छी।

नवल—खबरदार !

रामभरोस—अच्छा त दस हजार देब ! आब त अप्रसन्न नहि हैब।

नवल—ई राखू अहाँ अपनहि पास।

रामभरोस—त कत्तेक चाही ? खुलि कए बाजू ने ? हम नगद देब और एखनहि एही ठाम द' देब।

नवल—कहलहुँ ने, हम सब थूकैत छी एहन टाका पर।

रामभरोस—न-न-न-न ; से नहि बाजी ! लक्ष्मी पर थूक !

नवल—पापक सम्पदा लक्ष्मी नहि, अलक्ष्मी हैत छैक।

रामभरोस—अच्छा त बीस हजार ल' लियह।

नवल—एहि प्रलोभन सँ अहाँ क रक्षा नहि हैत।

रामभरोस—अच्छा त तीस हजार। एखनहि हमरा पास अछि और हम सब द' देबा लेल तैयार छी।

नवल—बेकार छटपटबैत छी।

रामभरोस—आइ हम बुझलहुँ जे टकेटा सँ सब काज नहि चलैत छैक। मुदा एक बेर हमरा सुधरबाक त अवसर दियह।

प्रकाश—हुँह! सुधार! कुत्तो क नांगरि कहियो सोझ भेल छैक?

रामभरोस—हमरा सुधरबाक लेल केवल एक अवसर द' कए देखि लेल जाउ।

नवल—कहलहुँ त, बेकार छटपटा रहल छी।

रामभरोस—[अकस्मात कनेक पाछाँ हटि कए चादरि तर सँ पिस्तौल निकालि कए तानैत गरजि कए बाजि उठैत छथि] सावधान! जीये चाहैत छी त हाथ ऊपर उठाउ। [नवल आ' प्रकाश हाथ उठा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि। रामभरोस बाबू क्रोध सँ ठोर चिबबैत] हरामजादा नहितन! समाज-सुधार करताह! भ्रष्टाचार रोकताह! साँप क मुहँ थकुचबाक ताकत एखनहु एहि हाथ मे छैक। [तावत् दबले पैरें दीपक अबैत अछि आ' पाछाँ सँ राम-भरोस बाबू क गट्टा पकड़ि लैत अछि। हुनकर हाथ सँ पिस्तौल खसि पड़ैछ। प्रकाश लाति सँ पिस्तौल कें दूर ठेलि दैत छैक। तावत् जीपक आवाज सुनना जाइछ आ' लगलहि सुनीता क संग पुलिस आबि जाइछ। रामभरोस

आतंक आ' पलायन क नाट्य करैछ ।]

दरोगा—[हाथ सँ रामभरोस दिसि इंगित करैत] पकड़ह ! [एक पुलिस हथकड़ी लेने आगाँ बढ़ैछ ।]

रामभरोस--नहि-नहि ! [भयभीत और असहाय मुद्रा मे] दरोगा बाबू, जतेक टाका चाही, ल' लियह । हम अहाँ सब कें मालामाल क' देब, मुदा ई बेइज्जती नहि ! हे, हम गोड़ पड़ैत छी ।

नवल—बेकार छटपटबैत छी ।

[पुलिस रामभरोस क पाछाँ खींचि लैत छन्हि । हुनक बाम हाथ सँ दाबल नोट क पुलिन्दा खसि पड़ैत छन्हि]

रामभरोस—[आर्त्त स्वरें] बाप रौ, बाप ! [तखनहि हथकड़ी हुनक हाथ मे पड़ि जाइत छन्हि और मंच पर अन्हार भ' जाइत छैक ।]

यवनिका-पतन

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[काल्लू सरदार क अखाड़ा। काल्लू सरदार मंच क एक कोना पर ठाढ़ अछि। शक्ति मंच क मध्यभाग मे ठाढ़ रहैत छथि।]

शक्ति—देखह काल्लू! एना व्यापार नहि चलैत छैक। आ' तकर अतिरिक्त हम सब बुड़बाक लेल त एहि कारबार मे पाइ नहि ढारलहुँ अछि।

काल्लू सरदार—हम की करब शक्ति बाबू! आमद बढ़बाक लेल हम चेष्टा की कम कैने छी ? मुदा......

शक्ति—ओहि चेष्टा-तेष्टा कें गोली मारह। एहि महीना मे मात्र उन्नैस टा नेना कें पकड़ल गेल और पन्द्रहे टा लड़की जाल मे फँसल अछि। आन कोनो तरह क आमदनी त हमरा एखन धरि नहि भेल अछि।

काल्लू सरदार—कोना नहि भेल ? गांजा-भांग और अफीम क कारबार सँ अहाँ कें दस हजार देने छलहुँ और सुतरल त दू-तीने मास मे लाखो टाका भेंटि सकैत अछि।

शक्ति—तोहर ई सुतरनाइ कोन युग मे हैत.गे से नहि जानि !

काल्लू सरदार—आ' एहि सब कारबार मे सब दिन एके रंग

आमदनी त भइये नहि सकैत छैक। मास क मास बैसल रहू और सुतरल त एकहि दाव मे लाख क लाख बरसि पड़त।

शक्ति—मुदा हमरा त किछु औरे खबर अछि। [कने रुकि कए विकृत स्वरें] एक-सँ एक सुन्दरी कें बजा-बजा कए मन-माना पैसा लुटाओल जाइत छैक और विदेशी दारू पानि जकाँ उभझलल जा रहल छैक।

कालू सरदार—[चौंकैत] क-किन्तु अहाँ कें ई सब बात के कहलक? कोन साला चुगलखोर ई सब फालतू बात......

शक्ति—[हँसैत] देखह कालू, एहि मे उत्तेजित हैबाक कोनो बात नहि। अड्डा मे कतबा टाका आबैत छैक और कतबा वास्तव मे खर्च होइत छैक तकर पता हमरो रहैत अछि।

कालू सरदार—तखन अहाँ क ई अनुमान अछि जे हम टाका दाबि लैत छी और अहाँ कें गलत हिसाब दैत छी?

शक्ति—हम कोनो गप मात्र अनुमान क आधार पर नहि करैत छी और तों की करैत छह से तोरे बूझल छह।

कालू सरदार—अहाँ क शंका निर्मूल अछि शक्ति बाबू!

शक्ति—से सब छोड़ह। एतबहि यादि राखह जे हमरा जा धरि नीक जकाँ टाका भेंटैत रहत ता धरि हमरा रंचहु मात्र चिन्ता नहि रहत जे तों सब कतेक उड़ाबैत छह आ' की करैत छह [स्वर कें कर्कश बनबैत], मुदा.........मुदा सावधान!

कालू सरदार---हम चेष्टा करब जे अहाँ कें कोनो शिकायत नहि रहि जाय।

शक्ति—हँ करह ! और करैत काल एतबहि मन राखह जे दुनिया मे एक कालू गेने हजारो कालू आओत, मुदा समय कहियो घुरि कए नहि आबि सकैछ। तों सब ई एक मास नष्ट कैलह। तोरा हम आरो एक हप्ता समय देत छियह।

कालू सरदार—[कनेक मेहायल कंठें] बेश !

शक्ति—अच्छा, त हम एखन जा' रहल छी, मुदा सावधान !

कालू सरदार—[शक्ति प्रस्थित होइत छथि। कालू सरदार किछु काल मौन भ' कए ठाढ़ रहैत अछि। तकर बाद डाँड़ मे लपटल टाका निकालि कए पुलिन्दा कें चूमैत] दुर्दिन क संगी तोंही टा छें बन्धु ! [ई कहि कए पुलिन्दा कें छाती सँ लगा कए राखैत अछि कि नेपथ्य सँ मन्नूराम क कंठस्वर सुनल जाइछ।]

मन्नूराम—[नेपथ्य सँ] सरदार ! सरदार !!

कालू सरदार—के ?

मन्नूराम—[प्रविष्ट होइछ। आँखि धसल, भरि गाल दुश्चिन्ताक दाढ़ी एवं स्वास्थ्य किछु भग्न सन प्रतीत होइत अछि।] सरदार !

कालू सरदार—की तखन सँ सरदार-सरदार क रट्ट लगौने छें ? की भेलौक ?

मन्नूराम—सरदार ! हमर बेटी आइ तीन दिन सँ बीमार

अछि—बेहोश पड़ल अछि। अपन मुहल्ला क डाक्टर कह-लक बड़का डाक्टर कें बजेबाक लेल।

कालू सरदार—ओ……! तों कक दिन सँ नहि ऐलें, तकरे लेल ई बहाना छियैक की ?

मन्नूराम—नहि सरदार। तोहर किरिया, अपन किरिया, धर्मक किरिया, भगवान क किरिया ! हमर बेटी साँचे बीमार अछि। नेमुनियाँ सँ छटपटा रहल अछि। एहि मे तोहर मदति चाही।

कालू सरदार—एहि मे हम क' की सकैत छियौक ?

मन्नूराम—हमरा टाका चाही सरदार—कम-सँ-कम दू सौ टाका चाही।

कालू सरदार—नहि-नहि ओत्तेक टाका हमरा कतय सँ आओत ?

मन्नूराम—[मन्नूराम क नजरि कालू क हाथ मे धैल टाका पर पड़ैत अछि।] बैह त तोरा पास हजारो टाका छौक सरदार।

कालू सरदार—[हाथ क टाका क पुलिन्दा कें शीघ्रतापूर्वक पुनः डाँड़ मे खोंसैत] नहि-नहि, टाका-ताका नहि हैतौक !

मन्नूराम—तोहर पैर पड़ैत छियौक सरदार ! हमरा मात्र दू सौ टाका द' दे—बेटी क जान बाँचि जायत।

कालू सरदार—साला, एक त तौं पछिलका हप्ता मे एक लॉरी दवा पुलिस कें द' ऐलें। ताहि लेल आइ कत्तेक गंजन सुनै पड़ल अछि जनैत छें ? और ऐलाहें ऊपर सँ टाका मांगै !

मन्नूराम—सरदार ! ई हमर बच्चा क जान क सवाल थीक। ओकर जान टा बचा दे। तखन हम जिनगी भरि तोहर गुलाम भ' कए रहबौक। ओ नहि बचने हमर घरवालियो जहर खा कए मरि जायत।

काल्ू सरदार—नीके हैत। साला, गेल छलाह बियाह करबा लेल आ' संसार बसैबा क लेल। अरे हमरा सब कें त कोनो जनानी क लहासे सँ भूख मेटायब उचित थीक।

मन्नूराम—मुदा सोनिया कोनो जनानी क लहास नहि थीक सरदार ! ओ हमर घरवाली थीक। ओ हमरा सभ क बेटी कें ल' कए कत्तेक सपना देखैत अछि, से जनैत छें? [काल्ू कें निरुत्तर देखि कए] ओ कहैत अछि—ओकरा पढ़ाओत, लिखाओत और......

काल्ू सरदार—[बात काटैत] बस, बस, बस, बस ! बहुत भेलौक ! [शब्द पर जोर दैत] पढ़ाओत, लिखाओत ! चल हँट ! [कनेक ठहरि कए] देख मन्नू, तोरा हम मना क' दैत छियौक, कहियो भूलियहु कए हमरा लग ककरहु बहु-बेटी क गुण-गान नहि करिहें !

मन्नूराम—कियैक सरदार ?

काल्ू सरदार—[मन्नूराम क बात सुनि कए उच्च स्वर मे हँसैत] कियैक ? तोरे जकाँ हमरहु मन मे अटल-अडिग विश्वास छल स्त्री-जाति पर। ओहि जाति क एक दूध सँ धोयल पंक-लिप्त पुतली कें देखलियैक जे अपन सोहाग क लाज धो कए

पीबि गेल अछि आ' कोनो बस्तु क अभाब नहि रहितहु घृण्य बासना क तृप्ति क लेल घरे-घर छिछिया रहल अछि। आ' जखन हमरा अपन पत्नी क ई घृण्य व्यभिचार और नहि सहल गेल, तखन सड़ल मांस क ढेला कें चीरैत हमर थर-थर काँपैत छूरा पुछने छल— कियैक ? कियैक तों एहन काज कैलें ? कियैक तों पर पुरुष सभ क पास अपन देहक दीप जरैलें ? कियेक हमर सन्तान अपन माय क स्नेह क अधिकार सँ बंचित भ' कए तिल-तिल घुलि कए मरि गेल ? कियैक ई सब भेल —कियैक, कियैक, कियैक ? [कहि कए कनेक बिराम क बाद पुनः स्वर मे परिवर्त्तन आनि कए कहैत अछि] तकर बाद जेल गेलहुँ। आ' ताहि दिन सँ हम जानलहुँ जे एहि संसार मे कोनो साला ककरहु नहि होइछ—ने क्यो भाइ, ने क्यो बहिन, ने क्यो माइ आ' ने क्यो बाप। और पुण्य नाम क कोनो वस्तु दुनिया मे छैके नहि। तें, जकरा जेना होमै, साला लूटि कए खा और मौज करह !

मन्नूराम—किन्तु सरदार, हमर बेटी—हमर सोनिया ? ओकरा सभक की हैत ?

कालू सरदार—आह ! बन्द कर ई सब ढरनच ! [कनेक रुकि कए] के तोहर बेटी ? के तोहर घरवाली ? क्यो ककरहु नहि होइछ। साला, ओ बेटी जकरा लेल तों तखन सँ खिखनी क' रहल छें, केहन छुछुन्नरि हैत गे से के जानै ?

मन्नूराम—[दुःखद स्वर मे चिकरि कए] सरदार ! [आँखि

मे नोर आबि जाइछ] ई तों की कहैत छें सरदार ?

कालू सरदार—[कालू सरदार तखनहि घर क एक कोना मे राखल टेबुल पर सँ बोतल उठा कए एक घोंट मुहँ मे दैत] सुन, सुन; हमर बात मान मन्नू ! [पुनः पान करैत] घर जो और ओहि बेटी आ घर वाली क गर दाबि कए कूड़ादानी मे फेंकि दे। भोरुका पहर कारपोरेशन क जमादार उठा कए ल' जैतौ। एत्तेक झमेला मे जैबाक कोन काज ?

मन्नूराम—[प्रचंड उत्तेजित भ' कए आँखि मे धधकैत अग्नि-शिखा नेने कालू सरदार क दिसि अगुआ जाइत अछि] सरदार ! [कहि कए कालू सरदार क गर दाबबाक चेष्टा करैत अछि। किन्तु कालू एकहि झटका मे ओकरा हँटा कए फेंकि दैत छैक।]

कालू सरदार—[रुद्ध कंठस्वर मे] चल हट साला, कुकुर क औलाद, मन्नूराम क बच्चा, जो भाग ! एखन हमरा पीबै दे !

[कालू दर्शक क बाम दिसि ठाढ़ भ' कए झूमैत मदिरा पीबि रहल अछि आ' मन्नू दर्शक क दहिना दिसि माटि पर पड़ल कानैत रहि जाइछ। तखनहि मंच पर अन्हार पसरि जाइत छैक।]

द्वितीय दृश्य

[शक्ति बाबू क ड्रॉइंग रूम। सब किछु पूर्ववत् रहैत अछि। शक्ति बाबू अल्पालोक मे धूम्रपान करैत-करैत ट्रांजिस्टर कें विभिन्न स्टेशन पर घुमा रहल छथि। ओहि अन्धकार-प्राय प्रकोष्ठ मे मात्र स्टैंडिंग-लैम्प बरि रहल अछि। नेपथ्य सँ दरवाजा पर खटखटेबाक शब्द सुनना जाइछ एवं लगलहि विनय क कंठस्वर सेहो सुनना जाइछ।]

विनय—[नेपथ्य सँ] शक्ति, शक्ति !

शक्ति—[बत्ती बारैत छथि। समग्र घर आलोकित भ' उठैत अछि। अगुआ कए केबाड़ी खोलैत छथि। विनय कें प्रविष्ट होइत देखि] की बात थीक ? की चाही ?

विनय—[मृदु हँसैत संकुचित स्वरें] हें-हें, हें-हें ! शक्ति, हम छी—विनय !

शक्ति—ई त कोनो नव बात नहि भेल। मुदा तों चाहैत की छहक ?

विनय—कोनो नव वस्तु नहि। ए हें-हें, तों त जनिते छह जे हम तोरा पास कथी लेल अबैत छी।

शक्ति—[उत्तेजित भ' कए दर्शक क दिसि मुहँ घुमा कए] हँ; जनैत छी, तोरा टाका चाही, टाका, मद पीबाक लेल। मुदा......

विनय—[साग्रह] ठीक, एकदम ठीक कहले। बस, आइयेटा

द' दइक। [शक्ति कें निरुत्तर देखि] हम त बेसी नहि माँगि रहल छियह। मात्र एकटा सौ टकही—बस। देखिह, कालिह सँ हम सेहो नहि माँगब, पीनाइये छोड़ि देब। और तों……

शक्ति—विनय! इयैह बात तों कालिहयो कहलहक, परसुओ कहलहक और एकर बाद तों की कहबहक से हम जानैत छी। तों कहबहक जे हम तोरा कालिह टाका देबाक प्रतिश्रुति देने छलहुँ। तखन हम कहब—नहि। तों कहबहक… [वाक्य कें असमाप्त राखि] जाय दहक!

विनय—मुदा, शक्ति! हम विनय छी, विनय—तोहर मित्र, तोहर नेना क साथी!

शक्ति—[विकृत कंठें] नेना क साथी! [कहि कए उच्च स्वर मे हँसि दैत छथि। तकर बाद कहैत छथि] विनय! तोहर ईहो डायलौग बहुत पहिलुका छह। आ' नाटक क त अन्तिम दृश्य आबि गेल अछि। [कनेक मौन रहि कए] विनय! तीन दिन पहिने हमरा सभक आफिस क कैश सँ पचास हजार टाका क गबन भ' गेल अछि।

बिनय—[चौंकैत] की कहैत छहक शक्ति! के चोरी कैलक?

शक्ति—[माथ डोलबैत] उहूँहुँ विनय, एना क नहि चौंकह! के चोरी कैलक से एखनहि बता रहल छियह। [किछु काल मौन रूपें पदचारणा करैत] आफिस क सन्दूक क चाभी तीन गोटा क लेबाक अधिकार छैक—लखपति, शक्ति आ'

विनय। चोरी त इयैह तीन गोटा मे सँ क्यो कैने हैत ?

विनय—अवश्य।

शक्ति—ओहि दिन लखपति आफिसक काजें बर्द्धमान गेल छल। तैं, ओ भरि दिन ने आफिस आयल आ' ने कारखाना।

विनय—[विमूढ़वत्] तखन ?

शक्ति—लखपति क ऊपर भार छलैक कारखाना क। ओ नहि छल, तैं ओहि दिन एक बेरि आफिस मे जाइये कए हमहूँ कारखाना चलि गेल छलहुँ। [विनय किछु कहै चाहैत अछि, मुदा ओकरा हाथ सँ थम्हा कए शक्ति कहितहि रहि जाइत छथि।] क्यो कहि सकैत अछि, जे हम जखन एकहु बेर आफिस गेल छलहुँ, तखन ओ चाभी ल' सकैत छलहुँ, सैह ने ? [विनय माथ डोला कए स्वीकृति दैत अछि], किन्तु हम जखन आफिस जा कए औतय सँ कारखाना क लेल जा रहल छलहुँ, तखनि कैश डिपार्टमेण्ट क लोग सब टाका गनैत छल। और बाद मे हम खोज लेबाक बाद जानलहुँ जे तखन टाका कम नहि छल।

विनय—तखन चोरी भेल कखन ?

शक्ति—कहैत छियह विनय, एत्तेक अधीर नहि बनह ! वैह दिन जायत काल जखन पुनः ओ सब कैश मिलौने छल, तखनहि पता चलल जे पचास हजार टाका गायब भ' गेल अछि। [किछु काल मौन रहि कए] तखन तीन गोटा मे सँ शक्ति आ' लखपति क नाम कटि गेलैक, रहल......[तिर्यक दृष्टि

सँ विनयक दिसि देखैत वाक्य कें असमाप्त छोड़ि दैत छथि]

विनय—[चौंकैत] किन्तु तों कहै की चाहैत छहक शक्ति ?

शक्ति—[उच्च स्वरें] तों जानि बूझि कए अनजान बनबाक चेष्टा क' रहल छह विनय।

विनय—तकर अर्थ ?

शक्ति—तकर अर्थ ?—तकर अर्थ इयैह जे श्रीमान विनय भूषण शर्मा ओहि दिन आफिस क कैश सँ पचास हजार टाका हटा कए कोनो सुरक्षित स्थान मे राखि देने छथि।

विनय—[चीत्कार क' कए] शक्ति! की कहैत छहक ? हम, हम कियैक चोरी करब ?

शक्ति—[सहज स्वरें] से जानबाक भार पुलिसे पर छोड़ि दहक।

विनय—[घबड़ा कए] पृ-पू-पुलिस ? मुदा शक्ति ! [शक्ति कें मुहँ घुमौने निर्विकार मुखें ठाढ़ रहैत देखि] विश्वास करह शक्ति। हम ई काज नहि कैने छी। हम कोना कए क' सकैत छी ? [अनुनय करैत] शक्ति ! तों पुलिस कें नहि बजाबह; तोरा अवश्य कोनो भ्रम भेल छह।

शक्ति—देखह विनय, ई पुलिस-तुलिस क झमेला हमरहु नीक नहि लगैत अछि। आ' तकर अतिरिक्त तों हमर नेना क मित्र थिकह ! [विनय साग्रह शक्ति क दिसि देखैत अछि] तों एकटा काज करह, ओ टाका धुरा दहक—चाही त हम तोरा तीन दिन क समयो.........

विनय—[बात काटैत हतप्रभ भ' कए] तों त जनिते छह शक्ति, हमरा पास एखन ने जगह, ने जमीन, ने आने कोनो संपत्ति अछि जे हम सेहो बेचियो कए एतेक टाका द' सकी।

शक्ति—[बनावटी दुःख प्रकाश करैत] हँ! से त हम जनिते छी। और हम बुझैत छी जे तों बाध्य भ' कए टाका लेलह।

विनय—नहि शक्ति, एना नहि कहक। हम सपनहुँ ई चोरी नहि कने छी। हम एहि विषय में किछु नहि जानैत छी।

शक्ति—आ' कैनहु हैबह त हम दोष थोड़बे दैत छियह? हम त मात्र टाका घुरैबाक बात कहि रहल छियह।

विनय—[शक्ति कें समझैबा क चेष्टा करैत] हम कोना घुराउ ओ टाका, जखन कि हम लेलहुँ नहि? तकर अतिरिक्त हमरा पास टाका रहतिहैक त हम तोरा सँ एखन टाका कियैक माँगै एतहुँ?

शक्ति—[उच्च स्वर मे हँसैत कहैत छथि] विनय! तों त पहिने एतेक चालाक नहि छलह? तोहर स्थान पर रहितहुँ, त हमहूँ एहिना बजितहुँ। जाय दहक ई सब बात............ [पदचारणा क' कए] मुदा एकटा बात हम साफ-साफ कहि दैत छियह जे जौं तों टाका नहि देबै चाहैत छह त हमहू पुलिस कें रोकि नहि सकैत छी। कारण, हमरा सभ क कम्पनी पब्लिक लिमिटेड कम्पनी अछि। दू-चारि दिन, तोरा हम बचा सकैत छी, किन्तु तकर बाद सब क्यो जखन हिसाब माँगत......

विनय—किन्तु शक्ति, हम तोरा सँ हाथ जोड़ैत छियह जे तों जे किछु करह, मुदा पुलिस……

शक्ति—[किछु चिन्तित भ' कए] हम पुलिस कें रोकि सकैत छी एकहि शर्त्त पर।

विनय—[साग्रह] कोन शर्त्त पर ?

शक्ति—[दराज सँ एकटा कागज निकालि कए] एहि कागज पर सही करै पड़तह। [कहि कए विनय क हाथ मे कागज दैत छथि। कागज पढ़ैत-पढ़ैत विनय क मुख क भाव बदलि रहल अछि से देखि कए] देखह विनय ! हम तोहर बाबूजी क आभारी छी। तैं अपन जेबी सँ टाका द' कए कालिह आफिस क हिसाब मिला देबैक। किन्तु तोरा ताहि लेल मूल्य देमै पड़तह—एतय सही क' कए।

विनय—[उदास भावें] मुदा ई अन्याय भ' रहल छह !

शक्ति—तखन पुलिस क सामना करबाक लेल तैयार रह।

विनय—[बिमूढ़ जकाँ] सही करैये पड़तैक ?

शक्ति—हँ विनय, कनेक शीघ्र करह। कारण, पुलिस थाना सँ एखन रवाना भ' रहल हैतैक !

विनय—[पुलिस क नाम सुनितहि चौंकैत] नहि नहि, पुलिस नहि, हम क' रहल छी सही। [कहैत कम्पित हार्थे सही क' दैत अछि।]

शक्ति—[विनय कें सही करैत देखि क्रूर हँसी हँसैत] देखह विनय ! हम तोहर मित्र छी। तैं हम आशा करैत छी जे

हमर बात क देःख नहि मानबह ।

विनय—नहि, से कियेक ?

शक्ति—आफिस मे कोना क' नहि जानि एहि बात क पता सब कें चलि गेल छैक । तोरा आफिस गेला सँ ओ सब की करत से नहि जानि । हम पुलिस कें त रोकि सकैत छी, मुदा निन्दक कर्मचारी सभ क मुहँ कोना बन्द करू ? तें [किछु काल मौन रहि कए] हमर विचार जे तों कालिह सँ आफिस मे नहि आबह । सैह नीक हैतह । [विनय निःशब्द रहि माथ डोलबैत छथि । से तिर्यक दृष्टियें देखि कए शक्ति और कहैत रहैत छथि] हम एखनहु तोहर मित्र छी; तों भनहि हमरा धोखा द' सकैत छह, मुदा तैयो हम तोरा निराश नहि करबह । [जेबी सँ दस टा सौ टकही निकालैत] हे, इएह ले; नशा क खेल पाइ, जे तों माँगैत छलह । एहि सँ तोहर काज दस दिन धरि चलतह । आ'......[वाक्य कें किछु विलम्बित करैत] तकर बाद तों एत्तहु नहि आबिह । [विनय पुनः स्वीकृति सूचक माथ डोलबैत छथि] माने पास-पड़ोस क लोग एकटा पतित कें रोज एतय आबैत देखि हमरहि विषय मे किछु बेजाय......माने......तों त बुझतहि छहक......[वाक्य कें असमाप्ते राखि कए चुप भ' जाइत छथि ।]

विनय—[धीरे-धीरे मूड़ी उठौने] अच्छा, त हम चली । [कहैत-कहैत चिन्तातुर जकाँ प्रस्थित होइत अछि । थोड़ेक देर क

बाद शक्ति उच्च स्वरें ठहाका मारैत छथि। तखनहि मंच पर अन्धकार पसरि जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[काल्हू सरदार क अखाड़ा। मन्नूराम एसगरे पद-चारणा क' रहल अछि। पद-चारणा करैत-करैत मन्नू एक समय मंचक एक कोना पर एकटा उनटाओल कुर्सी पर लाति ध' कए ठाढ़ होइत अछि। डाँड़ सँ छूरा निकालि कए बटन दाबि कए छूरा कें खोलैत अछि। चकमक करैत छूरा क नोक जकाँ मन्नूराम क आँखि मे उन्मत्त हिंसाक विद्युत चमकैत अछि। ताहि समय नेपथ्य सँ शक्ति क कंठ-स्वर सुनना जाइछ।]

शक्ति—[नेपथ्य सँ] काल्हू! काल्हू!! [मन्नूराम चौंकैत प्रवेश-पथ क दिसि तकैत अछि एवं उन्मुक्त छूरा कें बन्द करैत अछि। शक्ति प्रवेश करैत छथि और काल्हू क स्थान पर मन्नूराम कें देखि] काल्हू कतय गेल?

मन्नूराम—हमहूँ त ओकरे प्रतीक्षा क' रहल छी मालिक!

शक्ति—मन्नूराम, तोरा पर आइ-काल्हि काल्हू सरदार एतेक बिगड़ल कियैक छन्हु?

मन्नूराम—कोना कहू? किछु हमर दुर्भाग्यें और किछु सरदार क दुर्भाग्यें ई सब भ' रहल अछि।

शक्ति—ई त नीक नहि।

मन्नूराम—नीक त नहियें मालिक। काल्हू सरदार क नजरि सँ जे एक बेर गिर जाइछ से फेर जीवित नहि रहि सकैछ।

शक्ति—तोहर बहुत प्रशंसा सुनने छियन्हु। तोरा जकाँ ईमानदार, उदार और दिलेर जौं कालुओ रहितिहे तखन अखाड़ा क आने रंगत रहतिहैक। खाली अपस्वार्थी आ' चाण्डाल भेने कतहु कोनो बड़का कारबार चलल्हैक अछि ?

मन्नूराम—किन्तु ओ सरदार बनल अछि ने! तैं अहंकार मे चूर भ' कए पदक लाभ उठा रहल अछि।

शक्ति—तों आइ रोजगार मे नहि गेलह ? की बात थीक ?

मन्नूराम—काल्हू सँ आइ एकटा हिसाब चुकैबाक अछि मालिक! [कहि कए छुरा कें घुरा-फिरा कए देखैत अछि।]

शक्ति—[अपन प्रसन्नता कें नुकबैत एवं हाथक घड़ी दिसि देखैत] हम कनेक हड़बड़ी मे छी, जा रहल छी। तों एकटा काज करिह।

मन्नूराम—हुकुम करू।

शक्ति—आइ त नहि, काल्हि कोनो समय काल्हू कें हमरा लग पठा दिह। [शक्ति क बात सुनितहि मन्नूराम उच्चस्वर मे हँसि दैत छैक।] की बात थीक ? हँसलह कियैक ?

मन्नूराम—मालिक, काल्हि काल्हू त अहाँक पास नहि जा सकत।

शक्ति—कियैक ?

मन्नूराम—आइ साँझ, जखन ओ अखाड़ा क सभ क मुँह सँ

रोटी छीनि कए विलायती शराब आ' नव कोनो नर्तकी क पायल क संग रभसैत रहल, तखनहि हमर ई छूरा धीरे-धीरे ओकर छाती चीरि देतैक आ'......

शक्ति—मन्नू !

मन्नूराम—आ' छाती चीरि कए भीतर देखतैक, कत्तेक कठिन अछि ओकर हृदय और देखतैक जे ताहू सँ लहू बहैत छैक कि नहि ?

शक्ति—की बात थीक मन्नू ? तोरा कालू सरदार सँ एत्तेक घृणा कियैक भ' गेलह ?

मन्नूराम—[मलिन हँसी हँसैत] मालिक, हमर सोना क संसार कें कालू सरदार माटि मे मिला देलक। हमर बेटी और बहु तड़पि-तड़पि कए मरि गेल और हम जीवित छी !

शक्ति—तोहर बेटी ? तोहर बहुओ छलह की ?

मन्नूराम—हँ मालिक ! सब छल आ' हमर छोट-छीन संसार बड़ सुखी छल। जाहि दिन हमर बेटी चिकित्सा क अभावें मरि गेल, ओही दिन हमर बहुओ हमरा सँ घृणा क' कए घर सँ चलि गेल। जैबाक पूर्व ओ कहि गेल छल, जे ओहो ओत्तहि जा' रहल अछि, जतय ओकर बेटी गेल छैक। और भोरहि हम देखलियैक जे घर क पछुआर मे नीमक ठाढ़ि सँ ओकर प्राण-हीण देह झूलि रहल छलैक।

शक्ति—[जी सँ आक्षेपात्मक शब्द करैत] कहक त, ई सब बात क खबर कालू त हमरा नहि कैलक। हमरा ई खबर

एकदम मालूम नहि छल, नहि त......

मन्नूराम—किन्तु कालू सरदार कें सब किछु मालूम छलैक मालिक। ओ बेईमान टाका क पिशाच अछि। जे मन्नूराम अपन जान पर खेलि कए हजार क हजार टाका ओकरा कमा कए देने छलैक तेकरहि बखत पर मात्र दू सौ टाका क लेल ओ दैला देलक। हम ओकरा जकाँ बेमानी नहि केलहुँ। टाका बीचे मे सँ उड़ा नहि लेलहुँ, नहि त आइ हमहूँ धनी रहितहुँ।

शक्ति—तोहर ईमानदारी क पता हमरो अछि मन्नूराम।

मन्नूराम—आ' ई टाका खैरात नहि माँगने छलियैक—पैंच माँगने छलियेक। मुदा ओ हमरा लसिया कए भगा देलक, जेना हम कुकुर जकाँ ओकरा पास एकटा रोटी क टुकड़ा माँगै गेल होय। तखनहि हम मने-मन कहने छलहुँ—कालू सरदार! कहियो हमरहु दिन आओत!

शक्ति—हमरो ओहि पापी क विश्वास नहि होइत अछि। किन्तु ओ एतेक नीच अछि! अपन संगी क साथ दगाबाजी! मन होइछ जे ओकर ठोंठ मोकि दी।

मन्नूराम—से कष्ट अहाँ कें नहि करै पड़त। [अपन चमकैत छूरा उनटा-पुनटा कए देखैत] ई छूरा ओकर खबरि लेतैक। हमरा केवल एतबहि प्रतिश्रुति दियह जे हमरा पर कोनो संकट आओत त अहाँ रक्षा करब।

शक्ति—मारह ओहि शैतान कें। तोरा कोनो डर नहि। पुलिस,

दरोगा आ' अफसर सभ कें सँभारबाक दायित्व हमर। मुदा काज सावधानी सँ हैबाक चाही। अही सँ जौं तोरा संतोष भेटन्हु त बढ़ि जा आगाँ।

मन्नूराम—हमरा अपन बेटी कें और अपन बहु कें अपनहि हाथें चिता पर चढ़ाबै पड़ल। आ' ओहि चिता क धधकैत आगि सँ जागल हमर प्रतिहिंसा। जखन सब किछु जरि कए छाउर भ' गेलैक, तखन वैह छाउर ल' कए हम प्रतिज्ञा कैलहुँ—कालू सरदार सँ एकर बदला हम लेबे करब ओकर खून सँ हाथ रंगि कए। मालिक, कालू सरदार कें हमर बहु-बेटी क मृत्यु क दाम चुकाबै पड़तैक।

शक्ति—देखह मन्नू! ओना हमरा खून-खराबी पसिन्न नहि अछि। और ई तोरा सभ क अपन मामला थिकह। हम एतबहु प्रतिश्रुति जे देलियह से केबल तोरा नीक लोक बुझि कए। ओना पहिनहि सँ हम बुझैत छलहुँ जे सरदार तोरा हैबाक चाही, कालू कें नहि। [जाइत जाइत पाछाँ घुमि कए] मुदा सावधान! काज होशियारी सँ हैबाक चाही!

[शक्ति प्रस्थित होइत छथि। मन्नूराम क आँखि सँ क्रोधाग्नि बरसि रहल अछि। मँच पर अन्हार पसरि जाइत अछि।]

यवनिका-पतन

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

[शक्ति क ड्राइंग रूम। शक्ति अल्पालोक मे मंच क मध्यभाग मे ठाढ़ छथि। शक्ति क मुख पर प्रकाश-रेखा पड़ैत अछि।]

शक्ति—विनय क हिसाब चुका देलहुँ। काल्‍हू सरदार एखन धरि चलि गेल हैत। आब......[सुदूरवर्त्ती कोनो वस्तु पर दृष्टि स्थिर कैने मन क दृढ़ निश्चय प्रकट क' रहल छथि। तावत् बाहर केबाड़ी पर अधीर कराघात सुनबा मे आबि रहल अछि। शक्ति कनेक थम्हि कए एकहि जगह ठाढ़ भ' कए उच्च स्वर मे कहैत छथि] केबाड़ी खुजले छैक। भीतर आउ। [कहबा क संगहि संग दरबाजा पर धक्का दैत मन्नूराम प्रविष्ट होइछ। ओकर दृष्टि उद्भ्रान्त, मुख दुश्चिन्ताग्रस्त तथा केश अविन्यस्त देखना जाइछ।]

मन्नूराम—[हपसैत-हपसैत] दोहाइ मालिक!

शक्ति—[अन्धकार मे अवधारण करबा मे असमर्थ होइत] के छें तों?

मन्नूराम—हम मनुवाँ......हम मनुवाँ छी मालिक!

शक्ति—मनुवाँ, कोन मनुवाँ? [कहि कए पलुआ कए स्टैंडिंग लैम्पक बत्ती बारैत छथि।] ओ......तों?

मन्नूराम—हँ मालिक, हमही छी। आइ भोर अहाँ जकरा काल्ह सरदार कें खून करै कहने छलियैक। से [घबड़ाहट देखबैत जोर सँ] खून भ' गेलैक !

शक्ति—[मुख पर प्रसन्नता क भाव] शाबाश ! मुदा......

मन्नूराम—[व्यग्र होइत] आब हमरा बचाउ मालिक ! सब भेद जाहिर भ' गेल छैक। आब हमरा......

शक्ति—[चौंकैत] आँय ? नहि-नहिं [क्रुद्ध भ' कए] हम तोरा खून करै कहलियह ? आ जौं तों खूनहु क' कए पचा नहि सकलह त सरदार की हैबह ?

मन्नूराम—[असहाय जकाँ] नहि मालिक नहि, एना नहि कहू। [तखनहि नवल प्रविष्ट होइत अछि। मन्नूराम एवं शक्ति कें बातचीत करैत देखि ओ थम्हि जाइत अछि। दुनू मे सँ क्यो ओकरा दिसि नहि देखैत छथि] अहीं त कहने छलहुँ जे खून हैबाक बाद सबटा झमेला अहीं सम्हारब। से खून त हम कैलहुँ। एखन......[खून क बात सुनतहि नवल देबाल सँ सटि कए रेडियो टेबुल आ शीशा क अलमारी क पाछाँ नुकबैत अछि।]

शक्ति—एखन की ? ई अदना बात तों पचा नहि सकैत छह ?

मन्नूराम—सब जानैत अछि जे अहाँ अड्डा क मालिक छियैक। लगलहि चलि कए जौं सब कें समझा-बुझा कए सभ क सोझा मे हमरा सरदार बना देल जाय त जे कनेक विरोधी अछि सेहो सब शान्त भ' जायत। और कालू क टूटा

पिट्टू जे पुलिस लग दौड़ल अछि तकरा पार क' देल जेतैक।

शक्ति—एखन अड्डा मे हमर गेनाइ सम्भव नहि।

मन्नूराम—[व्यग्रता सँ] तखन हमर की हैत ? हम कोना बाँचब ?

शक्ति—ताहि लेल हम अपना कें फँसा ली ?

मन्नूराम—मालिक, एना नहि कहू। हमरा बचा लियह ! फेर देखू हम कोना अहाँ क इशारा पर नाचैत रहैत छी। [असहाय भ' कए पैर पर खसैत अछि।]

शक्ति—[मन्नूराम कें पैर पर खसैत देखि चारू कात निहारि कए] अरे, हमर गोड़ धरने कोन लाभ ? हम करिये की सकैत छी ?

मन्नूराम—अहाँ बहुत किछु क' सकैत छी मालिक।

शक्ति—नहि-नहि ! तों नहि जानैत छह। एहि लेल बड़का-बड़का अफसर कें धरै पड़तैक; हजार जगह पैरबी करै पड़तैक। टाका पानि जकाँ बहाबै पड़तैक। ताहि मे हमहू बिका जायब।

मन्नूराम—हम पाइ-पाइ क' कए चुका देब। अहाँ जे काज कहब हम सैह करब मालिक। भरि जिनगी अहाँ क······

शक्ति—[क्रूर हँसी हँसैत] हम एहि बातक कोना विश्वास करू ?

मन्नूराम—अहाँ हमरा कोनो काज अढ़ा कए देखि लियह।

शक्ति—[किछु काल मौन रहैत छथि। तकर बाद पद-चारणा

करैत कहैत छथि] अच्छा ! त तोहर परीक्षे भ' जाय। [क्रूर मुद्रा और कठोर स्वर मे] तोरा हम बचा सकैत छियह मन्नूराम—एक शर्त्त पर। तों त जानैत छह जे हम व्यापारी छी और व्यापारी बिना दाम लेने ककरो किछु नहि दैत छैक।

मन्नूराम—हम दाम देब मालिक। कहू, की करै पड़त ?

शक्ति—जाहि हाथें तों काल्हू सरदार क खून केलह ओही हाथें आरो एक गोट लोभी मांस क लोथ कें तोरा चीरै पड़तह।

मन्नूराम—[कनेक उच्च स्वरें] माने, फेरो खून ?

शक्ति—[डाँटैत] आह, आस्ते ! क्यो सुनि लेतह। बाजह, तों तैयार छह एहन दाम देबाक लेल ?

मन्नूराम—[अँगुरी क नह कें दाँत तर दाबैत किछु काल सोचैत अछि। फेर कहैत अछि] बेश ! ठीक अछि।

शक्ति—लगैत अछि, तोहर मन मे किछु दुविधा छह ?

मन्नूराम—एकदम नहि। हम सर्वथा तैयार छी। बताउ के थीक ओ अभागल लोग जकरा एहि संसार सँ हटाबै पड़त ?

शक्ति—ओकर नाम छियैक लखपति।

[तखनहि प्रकाश-रेखा नुकायल नवल पर पड़ैत अछि जे परम आश्चर्य-चकित भए सब सुनि रहल अछि।]

मन्नूराम—[कनेक छगुन्ता मे पड़ि कए] बेश ! हम तैयार छी।

शक्ति—बुझलह मन्नू, तोहर रास्ता सँ काल्हू हँटलह और तों अखाड़ा क सर्व-सर्वा हैबह त हमरहु रास्ता सँ हमर पार्टनर

कें हँटबाक चाही [काल्पनिक गर्व सँ अकड़ैत] और तखन हमहूँ अखण्ड अधिकारी—सर्व-सर्वा ! हा-हा ! हा-हा !!

मन्नूराम—जी सरकार ।

शक्ति—सुनह ! हर मंगलवार साँझ कें लखपति भूतनाथ क मन्दिर जाइत छथि । आगामी मंगल क साँझ कें सेहो ओ जैबे करताह । तखन ओही दिसि परोपट्टा मे हुनका……

[हाथ सँ काटि देबाक इंगित करैत छथि ।]

मन्नूराम—जी सरकार । किन्तु पुलिस…… ?

शक्ति—आह ! तकर भार छोड़ह हमरा पर ! [घड़ी दिसि देखैत] देखह, समय बेसी नहि छह । काज क' कए साँझे अखाड़ा दिसि आबिह । हम ओतहि भेटबह ।

[मन्नूराम क प्रस्थान । शक्ति चारूकात देखि कए ड्रॉइंग रूम सँ निकलि कए घर क भीतर चलि जाइत छथि तकर पश्चात् नवल आलमारी क पाछाँ सँ बाहर होइत अछि ।]

नवल—[मंच क मध्य मे आबि कए शक्ति क गमन-पथ क दिसि देखैत रुद्ध कण्ठे कहैत अछि] बाबूजी, अहाँ ! अहूँ तेहने छी—एकटा साधारण कुचक्री मनुष्य क त्रास ? [कहैत] हम त अहाँ कें अपन मन मे कतेक ऊपर बैसौने छलहुँ । अहाँ हमर सब संचित श्रद्धा कें माटि मे मिला देलहुँ बाबू जी ! ओह ! [दुनू हाथ सँ मुँह कें झाँपने रहैत अछि । तखनहि मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

द्वितीय दृश्य

[काल्‌ू सरदारक अखाड़ा मे पूर्वदृष्ट चारि गोट गुण्डा कें नगर क पथ पर भिक्षुक क भेष मे ठाढ़ देखना जाइछ। चारि गोट भिखारी मे सँ पहिल अछि आन्हर, दोसर कोढ़ी, तेसर लूल्ह एवं चारिम तोतरा।]

अन्हरा—[कोढ़ी कें] ऐ! केहन आमद भेलह आइ, कोनो मनीबैग-तैग सुतरलह कि नहि ? [ओकरा निरुत्तर देखि] की बात थीक, चुप कियैक छह ?

कोढ़िया—अरे, हम आ ई तोतरा आइ भरि दिन बेकार घुमलहुँ, मुदा किछु नहि भेंटल।

लूल्हा—अरे किछु त भेले हैतह।

तोतरा—कि-कि-किछु नहि।

कोढ़िया—एक साला बुढ़बा क पाकिट पर कैंची चलैलहुँ त एक अठन्नी भेंटल।

लूल्हा—फेर जे कहैत छह, किछु नहि भेंटल।

कोढ़िया—पहिने सबटा गप सुनबह तब ने!

तोतरा—[कोढ़ि कें समर्थन करबाक भंगिमा मे] त-त-त-तब ने।

कोढ़िया—जेहो अठन्नी ओहि जेबी सँ मिलल, सेहो साला नकलीये छल। [सब क्यो एहि बात पर हँसि दैत अछि।]

तोतरा—असल मे सब स-स-साला नकलीये थीक।

कोढ़िया—आ' तों साला एकटा असली परमहंस छें; नहि ? [पुनः सब क्यो हँसि दैत अछि।]

लूल्हा—हे ! ई सब असली-नकली त होइत रहतैक बादो मे। एखन धन्धो लेल किछु सोचबह कि नहि ? ओना कुहाठ खैबाक मन होन्हु त......

अन्हरा—हँ कालिह सरदार क की हुकुम भेंटलह से मन छह ? मास पूरै मे एकै हफ्ता बाकी रहि गेल छैक।

कोढ़िया—आ' एखनहु धरि हम सब पचीसो टा छौंड़ी कें फँसा नहि सकलहुँ।

अन्हरा—त आइ सेहो हिसाब पूरा भ' जाय।

कोढ़िया—तोहर मुहँ मे घी-शक्कर ! मुदा भाग्यो हैतह तखन ने ? आइ जतेक छौंड़ी एहि बाटे निकलल अछि, सब साली फँसने वाली, मुदा एको गोटे क रंग-रूप नीक नहि।

लूल्हा—एह ! हिनका लेखें मेनका, रम्भा, उर्वशी सब अप्सरा कें एही बाटे जैबाक चाही।

अन्हरा—आ' से भाग्य हैतौक त अप्सरो आबि जैतौक।

लूल्हा—ईह ! अप्सरा एकरें लेल सींथ फाड़ने बैसल हैतैक।

अन्हरा—हैतैक ने त की ?

तोतरा—ह-ह-ह-ह-हैतैक ने-ने-ने-त की ?

अन्हरा—जय भगवती ! तीन टा करिया कबुत्तर चढ़ैबह। मनोकामना सफल क' दे।

तोतरा—[बाधा दैत] स-स-स- ! क-क-क्यो अबैछ।

[सुनबाक संगहि तुरत भिखारी सब मंच पर दूर-दूर छिड़िया जाइछ आ' अपन-अपन ढंग सँ भीख माँगनाइ आरम्भ क' दैत अछि।]

अन्हरा—[करुण स्वर मे गबैत अछि] हुँ-बाबा, हुँ-बाबा......
बाबा बैजनाथ हम आयल छी भिखरिया,
अहाँ के दुअरिया ना !
[गबैत-गबैत हठात् रुकि कए सुनीता कें प्रविष्ट होइत देखि]
बाबा ! एहि सूरदास कें दू टा पैसा !

कोढ़िया—[अन्हरा क बात काटि कए एक विशेष सुर मे कहैछ]
दी-ई-दी, दी-ई-दी, दी-ई-दी [कहैत-कहैत कटोरी बढ़ा दैत अछि ।]

लूल्हा—[एक कोना सँ घिसिया-घिसिया कए अपन हाथ कें देखबैत] दीदी, ओ दीदी ! दीदी, ओ दीदी ! किछु भिच्छा...

तोतरा—[तखनहि तोतरो अपन जी कें इंगित सँ देखबैत] ऐ द-द-दीदी ! [दाँत निपोड़ने कटोरी बढ़बैत] कि-कि किछु भ-भ, भ-भ-भिक्षा दियह ।

सुनीता—[चारू दिसि सँ आर्त्त याचना क स्वर सँ कनेक विच-लित हैत] सुनैत जा, हम सब कें देत जैबह, मुदा पहिने एक बात बता दे । [सब गोटे चुप भ' कए प्रश्न-सूचक मुद्रा मे ओकरा दिसि देखै लगैछ ।] किछु पहिने एहि बाटें सफेद कुर्त्ता आ' धोती परिहने, श्यैह प्रायः चालीस - बयालिस साल क उमिरबला कोनो लोग कें जाइतो देखने छियैक ?

तोतरा—छि-छि-छियैक । हुँ !

लूल्हा—[कर्कश स्वरें] हे साला चुप रह ! [कोमल स्वरें]
हुँ दीदी ; हुनक रंग गोर छन्हि ?

सुनीता—हँ रंग त गोरे छन्हि।

लूल्हा—आ' मुहँ-नाक सुन्दरे छन्हि ने ?

सुनीता—हँ; मुदा......

लूल्हा—मुदा कनेक चिन्तित जकाँ। अहीं सन सुन्दर, अहीं सन गोर आ'......हँ-हँ; एही बाटें गेल छथि !

सुनीता—कोन दिसि ? कत्तेक पहिने ?

[तावत् कोढ़िया आन सब कें आँखि सँ किछु इंगित करैत छैक। आन भिखारी सब पुनः दी-दी, दी-दी कहैत अगुआबैत छैक। सुनीता बैग खोलि कए ओहि सँ पैसा निकालवा लेल कनेक झुकैत अछि कि तखनहि एक गोटे पाछाँ सँ झपटि कए ओकर मुहँ एक गमछा सँ झाँपि दैत छैक। सुनीता चिकरैत अछि और पड़ैबाक उपक्रम करैत अछि, मुदा लूल्हा ओकर हाथ पकड़ि कए घींचै लागैत छैक। किछु काल छटपटा कए सुनीता लड़खड़ाबैत बेहोश भ' कए खसि पड़ैछ।]

अन्हरा—देखलें हमर बात ? ई कोनो अप्सरा सँ कम छैक ?

लूल्हा—एह, यार ! आइ माल भेंटलौक अछि !

तोतरा—हँ; म-म-माल भेंटलै !

लूल्हा—धत् साला; चल उठा।

[तखन सब गोटे सतर्क दृष्टियें सब दिसि निहारैत सुनीता कें उठैबाक उपक्रम करैत अछि। मंच अन्हार भ' जाइत छैक।]

तृतीय दृश्य

[विनय क घर। देवाल क स्थान पर एकटा कारी पर्दा झूलि रहल अछि। घर मे सर्वत्र घोर मलिनता क चिह्न परिलक्षित भ' रहल अछि। प्रकोष्ठ क एक दिसि बेंच देखना जाइछ जकरा ऊपर सुनीता क झाँपी राखल छैक। बुझाइ पड़ैछ जेना मद्धिम प्रकाश घर क श्मशान सनक उदासी कें और अधिक गम्भीर बनबैत जीवन तथा जगत पर व्यंग्य क' रहल हो।]

विनय—[मंच क सम्मुख भाग दिसि अगुआ कए दुनू हाथ सँ मुहँ झाँपने ऊपर तकैत] हे भगवान्! नहि जानि ई कथीक दण्ड द' रहल छी। हमर माय-बाप, स्त्री, सम्पत्ति—सब चलि गेल; मित्र अमित्र बनि गेल, हर्ष विषाद बनि गेल, अर्थ अनर्थ बनि गेल—ई सब किछु हम सहलहुँ। एखन अपन बेटी क सुख देखि कए हम जीवन क शेष दिन आनन्द सँ बिता सकतिहौं, सेहो हमरा लिखल नहि छल। [किछु काल मौन रहि कए] ओह! एहि घर क देवाल सब पर मृत्यु क भीषण हस्तलेख अछि। एहि देवाल सब सँ बास करैत-करैत हम पागल भ' जायब......

[एतबा कहि कए विनय पद्चारणा करैत-करैत दहिना दिसि मंच क कोना पर अबैत छथि कि सुनीता लघु पदक्षेप करैत प्रविष्ट होइत अछि। सुनीता क वसन असम्भृत, आंगी

फाटल, केश खुजल एवं आँखि क दृष्टि अत्यन्त अस्वाभाविक सन बुझाइछ।]

सुनीता—[धीरे-धीरे] बाबूजी ! [विनय सुनीता क शब्द कें नहि सुनैत छथि। तें सुनीता कनेक जोर सँ बजैछ] बाबूजी !

विनय—[चौंकैत] के ? [पाछाँ घूमि, सुनीता क दिसि देखैत विस्मय-मिश्रित उत्तेजना क संग] सुनीता ! ई हम की देखि रहल छी बेटी ? तोहर ई हाल के कैलक ? [विनय क वाक्य समाप्त हैबाक पहिनहि सुनीता अर्द्ध उन्मत्त जकाँ हँसै लगैत अछि। हँसैत-हँसैत सुनीता क आँखि मे नोर आबि जाइत छैक।] सुनीता बेटी ! के तोहर ई हाल......

सुनीता—[हँसैत-हँसैत हठात् रुकि कए, मुहँ क सामने चलि आयल केश-गुच्छ कें हटबैत तीक्ष्ण दृष्टियें विनय क दिसि देखैत] हमर की भेल से सुनि सकब बाबूजी ? एत्तेक धैर्य हैत ? [विनय कें निरुत्तर देखि] एकटा गुण्डा क अखाड़ा मे आइ तीन दिन सँ अहाँ क बेटी क देह लोग क......

विनय—[तामसें थर-थर काँपैत] सुनीता !

सुनीता—[हँसैत] और सुनब बाबूजी ? ओ सब हमर सब किछु लूटि कए......

बिनय—[सुनीता कें हाथ सँ रोकैत आँखि मुनने] नीता, रहै दे ! आब चुप भ' जो। ओह ! हमरा किछु नहि फुरैत अछि। हे भगवान् !

सुनीता—[मृदु-मृदु हँसैत] मुदा हमरा फुरैत अछि बाबूजी ! [कहि कए त्वरित गतियें बेंच लग जा कए झाँपी सँ एकटा शीशी निकालि कए उल्लास क नाट्य करैत शीशी कें हाथ सँ ऊपर उठा कए विनय कें देखबैत] एकरा हम बहुत दिन सँ, बहुत यत्नें सम्भारि कए रखने छलहुँ जे कहियो समय पर काज देत। कत्तोक बेर मन भेल जे एहि निस्संग जीवन क स्पन्दन कें बन्द क' दी। मुदा से नहि क' सकने छलहुँ। [विराम। हुपसैत] मुदा आइ......आइ ओ दिन आबि गेल अछि जखन......[एतबा कहैत-कहैत सुनीता विष क शीशी खोलै जाइछ कि विनय झपटि कए ओकरा दिसि बढ़ैत छथि।]

विनय—[चिकरि कए डाँटैत] सुनीता ! [शीशी छीनि कए ओकर लेबुल पढ़ैत] भयंकर विष ! Deadly poison [पढ़ि शीशी अपन जेबी मे राखि लैत छथि।]

सुनीता—ओ द' दियह बाबूजी !

विनय—नहि, नहि ! हरगिज नहि !

सुनीता—[क्रूर व्यंग्य-पूरित स्वरें] ओह ! ओहो नहि लैमे देब ? [हठात् किछु सोचैत बेंच दिसि अगुआबैत अछि और अपन झाँपी खोलि कए तुरत ओहि मे सँ मंगटीका निकालि कए विनय दिसि बढ़बैत] हा-हा, हा-हा ! तखन ईहो ल' लियह। माइ हमरा लेल ई सोहाग क चिह्न राखि गेल छलीह। [जोर सँ क्रन्दन-पूरित स्वरें] आब एकर

कोनो काज नहि। [पुनः अट्टहास] हे लियह, [विनय क हाथ मे दैत] एकरा बेचि कए मद कीनि कए पी लेब ! [अट्टहास]।

विनय—[जोर सँ रोष तथा क्रन्दन-पूरित स्वरें] सुनीता !

सुनीता—[अट्टहास] और रहू। [पुनः झाँपी खोलि कए चन्द्रहार ल' कए विनय क हाथ मे दैत] और हे ई चन्द्रहार सेहो हमर बियाह क लेल माइये राखि गेल छलीह। ईहो ल' लियह ! हम चललहुँ !

विनय—तों कतय जेबें ? एहि घर आ' कुल कें ध्वंस क' कए....।

सुनीता—[अट्टहास] जकरा अपन पत्नी अथवा सन्तान सँ बेसी आकर्षण बोतल क रंगीन जल से भेंटत छैक तकरो घर आ' कुल क रक्षा कहियो भेल छैक बाबूजी ? [देर धरि अट्टहास]।

विनय—हँ, ठीक कहलें। ई सब हमरे पाप क फल थीक ! सब हमरे......।

सुनीता—[पुनः झाँपी खोलि कए एक पितरिया पुचकारी निकालि कए] बाबूजी, ई पुचकारी हमरा मसिऔत भाउज पठौने छलीह जे बियाह भेला उत्तर फगुआ से हम दुलहा संग होरी खेलब, होरी। [अट्टहास। छुच्छे पुचकारी कें चलबैत विक्षिप्त जकाँ] दुलहा संग होरी ! पुच्च, पुच्च ! [पुनः अट्टहास] दुलहा संग होरी ! हा-हा, हा-हा !

विनय—सब दोष हमर ! सब हमरे पाप क फल थीक। सब

दोष हमरे......[कहैत-कहैत हाथ क गहना धरती पर फेंकि कए मंच क दहिना दिसि सँ प्रस्थान ।]

सुनीता—[विक्षिप्त जकाँ] दुलहा संग होरी ! हा-हा, हा-हा ! पुच्च, पुच्च ! [पुच्च-पुच्च कहैत मंच क बाम दिसि सँ प्रस्थान ।]

यवनिका पतन

पंचम अंक

प्रथम दृश्य

[गम्भीर चिन्ता-निमग्न नवल पार्क क वेदी पर बैसल अछि। मंच शनैः शनैः आलोकित होइत अछि। तत्पश्चात् बाम दिसि सँ खाली पैरें टगैत, खिन्नमना, सर्वस्वापहृता जकाँ मंथर गतियें सुनीता प्रविष्ट होइत अछि। साड़ी मलिन तथा केश रुक्ष और बिस्नस्त छैक। ओकर मुहँ सँ जड़ता, अवसाद तथा किंचित उद्विग्नता क भाव प्रकट भ' रहल छैक।]

नवल—[सुनीता क दुरवस्था देखि अपन दुश्चिन्ता कें बिसरि कए] की बात थीक सुनीता ? की भेल अछि ?

सुनीता—[किछु काल मौन रहि, नवल दिसि एक टक देखैत रहैत अछि। पुनः आत्म-नियन्त्रण करैत अश्रु-रुद्ध कंठें] हम......हमर सब किछु लुटा गेल नवल !

नवल—सुनीता ई की कहि रहल छी ?

सुनीता—हम ठीके कहि रहल छी ! अहाँ क सुनीता आब सुनीता नहि रहल; ई ओकर प्रेत छियैक !

नवल—अहाँ की सब बाजि रहल छी ?

सुनीता—हँ नवल ! हमर अपहरण भेल। गुण्डा सब हमरा बेहोश क' कए घीचि कए एक अड्डा मे ल' गेल और नर-

पिशाच सब हमर देह क ऊपर सब प्रकार क अत्याचार कैलक।

नवल—[चीत्कार क' कए] सुनीता! [माथ डोलबैत] नहि-नहि सुनीता, ई नहि भ' सकैछ।

सुनीता—ई भ' सकैछ आ' इयैह भेल अछि। [कनेक थम्हि कए] और जखन हम ओहि नरक-लोक सँ घर ऐलहुँ तखन उद्वेग मे बाबूजी कें किछु अपशब्द कहि देलियन्हि। विश्वास करू, हमर दिमाग ठीक नहि छल। [क्रन्दन-पूर्ण स्वर मे] और हमर बाबूजी ई आघात नहि सहि सकलाह।

नवल—[व्यग्र भ' कए] तखन की भेलैक ? सब किछु खोलि कए कहू सुनीता!

सुनीता—हमर बाबूजी [ठोर कें दाँत तर दाबैत] आत्म-हत्या क' लेलन्हि [क्रन्दन करैत]—विष खा कए!

नवल—[चीत्कार करैत] सुनीता!

सुनीता—[कनैत] हँ नवल, सबटा दोष हमरे अछि। हम नहि जानैत छलहुँ जे एहि बीच बाबूजी क ऊपर आनहु दिसि सँ एत्तेक आघात आयल छलन्हि। [कनेक थम्हि कए] आ' जखन हम से जानलहुँ, तखन बहुत देर भ' चुकल छलैक।

नवल—ओह! सुनीता, आइ हम ई की सब सुनि रहल छी ? कियैक अहाँ क एहन अवस्था भेल ? कियैक ई सब भेल ? हमरा किछु नहि फुरि रहल अछि। कियैक, कियैक ई सब भ' रहल अछि ? हमर सपना, हमर आस्था, हमर श्रद्धा,

हमर विश्वास सब किछु क देबार जेना ढहि रहल अछि।

सुनीता—विश्वास संसार मे छैके कतय ? बाबूजीयोक संग त विश्वासघाते भेलन्हि ने।

नवल—विश्वासघात ? के हुनका संग विश्वासघात कैलकन्हि ?

सुनीता—विष खैबाक पूर्व बाबूजी एक चिट्ठी मे सब किछु लिखि गेल छथि। है [आँचर क खूँट सँ एक मोड़ल कागज निकालि कए दैत] इयैह अछि ओ चिट्ठी।

नवल—[कम्पित हाथें सुनीता क हाथ सँ ओ चिट्ठी लैत अछि। चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत नवल क मुख विवर्ण भ' जाइत छैक और ओ थम्हि-थम्हि कए कहैत अछि] पार्टनर शक्ति कुमार राय......शेयर हस्तान्तर......चोरी क कलंक...... शक्ति कुमार ?......

सुनीता—[नवल कें लक्ष्य करैत बात काटि कए] हँ; शक्ति कुमार राय ! वैह छथि हमर बाबूजी क घातक ! वैह हमर बाबूजी कें पतन क पथ पर धकेलि देने छलथिन्ह।

नवल—[नवल सुनीता क बात नहि सुनैछ। ओ शक्तिक नाम ल' कए बड़बड़ाइत रहि जाइछ। सुनीता क कथन समाप्त हैबाक बाद ओ स्वर मे परिवर्तन आनि कए कनेक उत्तेजित भ' कए कहैत अछि।] नहि, आब हम नहि सहब......... आब......

सुनीता—[साश्चर्य] अहाँ की कहि रहल छी ? की नहि सहब ?

नवल—सुनीता ! हम......हम इयैह प्रतिज्ञा क' रहल छी जे

अहाँ क बाबूजी क हत्यारा कें पकड़ब। हुनक मृत्यु क आ' अन्याय क प्रतिशोध लेबे टा करब।

सुनीता—मुदा अहाँ ?......कोना ?

नवल—[सुनीता क बात काटैत] आह! हम जे कहैत छी से सुनू! आइ कोन दिन थीक ?

सुनीता—मंगलवार।

नवल—आइये सन्ध्या काल प्रकाश आ दीपक कें ल' कए ओहि नृशंस अपराधी कें पकड़बाक हेतु हम घर सँ प्रस्थान करब। अहाँ हमरा घर क पास चौराहा लग ठाढ़ रहब। हमरा देखितहि अहाँ हमरा सभ क पाछाँ-पाछाँ निःशब्द भावें चलि आयब।

सुनीता—[विस्मित भए] किन्तु......

नवल—आह सुनीता! हमरा एखन समय नहि अछि। सब कें खबरि देमै पड़त! पुलिस कें सावधान करै पड़त। हम चलैत छी! [कहि कए नवल झटकि कए मंच सँ प्रस्थित होइत छथि। सुनीता अवाक् भए देखितहि रहि जाइत अछि। मंच अन्हार भ' जाइछ।]

द्वितीय दृश्य

[काल्ह सरदार क अखाड़ा। नवीन सरदार मन्नूराम एवं शक्ति मंच क मध्य भाग मे राखल टेबुल क दुनू कात बैसल

छथि। टेबुल क ऊपर ढेर राशि नोट क पुलिन्दा सजाओल अछि। शक्ति बीच-बीच मे टाका क पुलिन्दा दिसि लुब्ध दृष्टियें देखि रहल छथि।]

शक्ति—वाह मन्नूराम। तों त कमाल क' कए देखा देलह।

मन्नूराम—सब अहीं क कृपा मालिक।

शक्ति—कृपा त कालुओ पर कैने छलहुँ। किन्तु ओ शैतान हमर निमक क दाम नहि चुकैलक। तों त एतबहि दिन मे आमदनी दुगुना क' देलह।

मन्नूराम—पहिनहि कहने छलहुँ मालिक, हमरा अखाड़ा क भार द' कए देखू—हम की करैत छी। एखन त आमदनी मात्र दुगुने भेल अछि। देखैत रहू जे थोड़बेक दिन मे और कत्तेक बढ़ैत अछि।

शक्ति—[मन्द-मन्द मुसकियाबैत] बेश! बेश!!

मन्नूराम—[बात काटैत] एखन हिसाब मिला लेबाक चाही।

[तखनहि नवल आ' सुनीता निःशब्द भावें प्रविष्ट होइत अछि। अति व्यस्तता क कारणें मन्नूराम वा शक्ति क्यो एहि दुनू कें देखि नहि सकल छथि।]

नवल—हँ मन्नूराम, हिसाब मिलैबाक समय आबि गेल छैक!

शक्ति—[चौंकैत] के?

नवल—हम—अहीं क विनम्र पुत्र नवल!

शक्ति—[अत्यन्त विस्मित भए] नवल......? तों एतय?

नवल—एत्तेक आश्चर्य कियैक भ' रहल अछि अहाँ कें? ई प्रश्न

त हमहूँ क' सकैत छी !

शक्ति—मुदा एतय कोना ऐलह ? के देखौलकह ई जगह ?

नवल—एतय ? चुपचाप अपन पिता क चरण-चिह्न पर चलि कए आबि गेलहुँ !

[अखाड़ा मे प्रवेश कैलाक पश्चात् आरम्भहि सँ सुनीता चारू कात चकित भए प्रखर दृष्टियें निहारि रहल अछि। नवल क मुहें 'पिता' सुनि कए ओ शक्ति दिसि देखैत अछि।]

सुनीता—[जोर सँ घृणा और विस्मय-युक्त स्वर मे] पिता ? अहाँ क पिता ?

नवल—हँ सुनीता, इयैह छथि हमर पितृदेव, इयैह छथि अहाँ क ओ पितृबन्धु और इयैह छथि एहि अखाड़ा क मालिक।

सुनीता—इयैह थीक ओ अखाड़ा। इयैह जगह। आ' हे वैह हमर चप्पल एखनहु पड़ल अछि। इयैह थीक ओहि पिशाच संभक......

नवल—हँ सुनीता, इयैह थीक ओ अड्डा !

सुनीता—[चीत्कार करैत] मुदा अहाँ......क बा...बू...जी ! नहि-नहि !

नवल—सत्ते सुनीता ! हमर बाबूजी ! चोरी, डकैती, बैमानी, अपहरण आ' नर-हत्या क सफल सूत्रधार, प्रतिष्ठित नागरिक, परम धार्मिक ! हमरे बाबूजी !

सुनीता—[आत्म-विस्मृत जकाँ] अहाँ......क बा...बू...जी ! [आवेशें] नहि-नहि ! ई नहि......ई की ?

नवल—ओऽ...आ' बाबूजी, ई अछि सुनीता—हमर वाग्दत्ता। सुनीता हिनका प्रणाम करियन्हु ! आ' ई सुनीता थिकीह—अहीं क मित्र विनय बाबू क कन्या !

शक्ति—[आश्चर्य तथा आवेश मे] विनय बाबू ?

नवल—[सहज भावें] हँ बाबूजी, वैह विनय बाबू अहाँ क पार्टनर ; नहि चिन्हलियन्हि ? [शक्ति कें आश्चर्य सँ देखैत देखि] जिनका पर अहाँ चोरीक कलंक लगौलियन्हि, जिनक सब शेयर पचा लेलियन्हि आ' जिनक [सुनीता दिसि अंगुरी सँ संकेत करैत] बेटी क अपहरण आ' गंजन करौलियन्हि, जिनका आत्महत्या करबाक लेल अहाँ बाध्य क' देलियन्हि वैह विनय बाबू।

शक्ति—विनय बाबू क कन्या !

नवल—हँ बाबूजी, हुनके कन्या......

[तखनहि प्रकाश और दीपक क संग दरोगा और सिपाही क प्रवेश। शक्ति और मन्नूराम विस्मित एवं आतंकित छथि। मन्नूराम व्याकुल भए चारू कात. पड़ैबाक पंथ निहारैछ।]

नवल—[मन्नूराम क प्रति ऊ-हुँ-हुँ मन्नूराम, वृथा पड़ैबाक चेष्टा क' कए लाभे की ?

दरोगा—पुलिस अखाड़ा कें चारू कात सँ घेरि लेने अछि।

नवल—आ' हमरा विचारें बन्दूक क गोली सँ फाँसी क रस्सी नरमे होइत छैक। [दरोगा क दिसि देखैत] इन्सपेक्टर, ई इयैह [संकेत करैत] थिकाह अहाँ क दुनू असामी—

शक्ति बाबू आ' मन्नूराम।

दरोगा—[सिपाही कें] एहि दुनू क हाथ मे हथकड़ी लगाबह!

[सिपाही पहिने मन्नूराम क हाथ मे हथकड़ी पिन्हैबाक लेल अगुआ' जाइत अछि।]

नवल—सुनीता! हम कहने छलहुँ ने, हत्यारा कें पकड़ब आ' अन्याय क प्रतिशोध लेब, से हम अपन बचन क रक्षा कैलहुँ! [हँसैत अछि] हा! हा!!...वैह देखू हमर बाबूजी कें......हा! हा!!......पिता हि परमो धर्मः......हा! हा!! [कहि कए उच्चकंठें हँसै लगैत अछि। नवल क दिसि साश्चर्य देखैत-देखैत जे जाहि मुद्रा मे ठाढ़ छल, ताही मुद्रा मे प्रस्तरीभूत भ' जाइत अछि। नवल क हँसी क वेग बढ़िते रहि जाइछ। आलोक अत्यन्त अल्प भ' कए मंच अन्धकार-प्राय भ' जाइछ।]

तृतीय दृश्य

[नवल हँसिते रहि जाइछ। ओहि हँसी क संगे-संग अन्हारहि मे नेपथ्य सँ हाहाकारमय कोलाहल सुनना जाइछ, जाहि मे एकहि मुहूर्त्त मे "बाप रौ" "नेना छीनि लेलक," "जेबी कटि गेल," "खून-खून," "ल' कए भागि गेल," "बचाउ-बचाउ," "दौड़ू-दौड़ू" इत्यादि सुनना जाइछ। नवल क हँसी क शब्द एहि कोलाहल मे डूबि जाइछ। अंकस्मात् सब

शब्द बन्द भ' जाइत छैक आ' अत्यल्पालोक मे नेपथ्य मे दूर सँ निम्नोल्लिखित पात्र सभ क कंठस्वर सुनना जाइछ—]

शक्ति— [नेपथ्य मे] हमरा अपना पर घृणा भेल, अपन गरीबी पर घृणा भेल, अपन धर्म, समाज, आदर्श, ईश्वर— सब किछु पर घृणा भेल आ' ओहि विपुल घृणा क पंकहि सँ जन्म लेलक हमर महत्वाकांक्षा और प्रतिहिंसा।

रहमत अली—[नेपथ्य सँ] सरदार, ओहि नेना क माय क चेहरा हू-ब-हू हमर छोटकी बहिन सन छलैक। जखन हम देखलियैक जे ओकरा साँइयो नहि रहलैक त ओकर एक मात्र आसरा ओहि नेना कें ल' कए हमरा नहिं पड़ा भेल सरदार !

मन्नूराम—[नेपथ्य सँ] हँ मालिक, हमरा सब छल आ' हमरा छोट-छीन संसार बड़ सुखी छल। जाहि दिन हमर बेटी चिकित्सा क अभावें मरि गेल, ओही दिन हमर बहुओ हमरा सँ घृणा क' कए घर सँ चलि गेल। और भोरहि हम देखलियैक जे घर क पछुआर मे नीम क ठाढ़ि सँ ओकर प्राण-हीन देह झूलि रहल छलैक।

सुनीता—[नेपथ्य सँ] हमरा की अभाव रहत कहू त ? जकर पास किछु छैक, अभाव तकरहि होइत छैक। हमरा त किछु अछिये नहि। जखन छोट छलहुँ माय तखनहि मरलीह, और हमर बाबूजी जीवित छथि, मुदा......

विनय—[नेपथ्य सँ] नीतू बेटी ! हमरा के सब ने धक्का देलक। धक्का खा कए हम जतय खसलहुँ, ओ छल एकटा कसाइ-खाना, जतय लोग अपन मांस बेचि-बेचि कए खूब कमा सकैत छल। ......हम एकटा दसटकही लड़की सँ पुछलहुँ, ई कोन देश थीक ? ओ कहलक ओहि जगह कें संसार कहल जाइत छैक। कह त केहन सुन्दर नाम थीक—सं-सा-र।

[विनय क अन्तिम शब्द क समाप्ति क संगहि अत्यल्पालोकहि मे नवल क अट्टहासक पुनः आरम्भ भ' जाइत छैक। आलोक ओकर मुहँ पर विक्षिप्त जकाँ, अट्टहास क संग ताल रखने थर-थर काँपैत पड़ि रहल अछि। लगलहि शनैः-शनैः आलोक पसरै लगैत अछि। पूर्ण आलोक पसरलाक पश्चातो नवल अत्यन्त विक्षिप्त जकाँ हँसिये रहल अछि। तखनहि प्रेक्षक लोकनिक दिसि सँ नाट्यकार आगाँ बढ़ैत छथि और मंच पर चढ़ैत देखल जाइत छथि। नाट्यकार प्रेक्षकाभिमुख भए, अट्टहास-निरत नवल कें छुबैत छथि कि तखनहि ओकर हँसी बन्द भ' जाइत छैक और ओहो प्रस्तरीभूत भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—[नवल क देह कें कैक जगह टेबि कए देखैत-देखैत प्रेक्षकवृन्द क दिसि घूमि कए कहैत छथि] और तकर बाद सँ आइ धरि नवल, हमर नाटक क नायक, प्रति राति मे एहिना पागल जकाँ हँसैछ, कानैछ, बिलपैछ—प्रति मुहूर्त्त ओ अपन कथी क ने प्रायश्चित्त क' रहल अछि। [किछु विराम क

पश्चात् नवल क देह सँ हाथ हँटा कए पदचारणा करैत]
एखन अहीं सब कहू एहि जीवन्मृत नायक कें ल' कए हम
की करू ? ओ यावत् धरि नहि मरै तावत् धरि हम कोना
मारू ओकरा ? [विराम] मुदा, ई सब बात सोचितहि
हमरा मन पड़ि जाइत छथि अपन प्रकाशक जे कठोर शब्द
मे हमरा नीक जकाँ चेता गेल छलाह जे जौं हम एहि बेर
नायक कें नहि मारी त ओ हमर पड़ोसी नाट्यकार असिते
बाबू सँ नाटक क सट्टा क' लेताह। फेर सोचैत छी मरणहु
सँ कत्तेक भीषण छैक नवल क जीवन ! [किछु काल मौन
रहि कए] अहाँ सब कें एतबाक देर मे हम सम्पूर्ण नाटक
बता गेलहुँ। एखन अहीं सब हमरा कहू—हम एहि उभय-
संकट मे की करी ! नायक कें मरण क माल्य सँ भूषित करी
अथवा जीवन क जयशब्द सँ स्पन्दित करी ?

पटाक्षेप

प्रथम अभिनय रजनी

आन्ध्र ऐसोसियेशन हॉल, कलकत्ता
विद्यापति स्मृति-पर्व
६ फरवरी, १९७२

नाट्यकार—नचिकेता
शक्ति—शुकदेव ठाकुर
लखपति—श्रीमन्त मिश्र
विनय—जनार्दन झा
नवल—रामलोचन ठाकुर
प्रकाश—श्रीकान्त मंडल
दीपक—बालेश्वर झा
काल्लू सरदार—उदय नारायण सिंह
मन्नूराम—गौतम भारती
पहिल गुण्डा—
दोसर गुण्डा—गोपाल ठाकुर
तेसर गुण्डा—चंचल ठाकुर
चारिम गुण्डा—सियाराम झा
रामभरोस—द्वारिकानाथ चौधरी
पहिल किरानी—द्वारिकानाथ चौधरी
दोसर किरानी—गोपाल ठाकुर
दरोगा—कान्तिबिहारी मिश्र
सिपाही—जयवल्लभ झा
सुनीता—चन्द्रकला 'किरण'
नर्तकी—

लेखक-परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'।

संस्कृत, मैथिली, बंगला, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच तथा भाषाविज्ञान मे विशेष अध्ययन।

साहित्य, संगीत, आ' चित्रकला मे विशेष रुचि।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ—

कथयो-वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संग्रह)

अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संग्रह)

नायक क नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)

'मैथिली कविता' त्रैमासिकी पत्रिका क सम्पादन।

तत्काल,

१६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५ मे अवस्थिति।

स्थायी निवास—

ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बजार, जिला—सहर्षा।